तज़्किया
आत्मा का शुद्धिकरण
मौलाना वहीदुद्दीन ख़ान

लेखक

मौलाना वहीदुद्दीन ख़ान

अनुवाद

तनवीर अहमद

संपादक

मोहम्मद आरिफ़

विषय-सूची

भूमिका

शरीर का एक आहार है। यह आहार शरीर को मिलता रहे तो शरीर स्वस्थ रहेगा। इसी तरह आत्मा का भी एक आहार है। यह आहार जब आत्मा को पहुँचाया जाता है तो आत्मा स्वस्थ हो जाती है। इसी प्रक्रिया (process) का नाम तज़्किया-ए-नफ़्स है और इसी स्वस्थ आत्मा को निर्मल और विशुद्ध आत्मा (purified soul) कहा जाता है। क़ुरआन के अनुसार आत्मा का यह आहार सोच-विचार (3:191) है।

इंसान के आस-पास हर समय कुछ-न-कुछ घटनाएँ घट रही हैं। सामाजिक, ऐतिहासिक और कायनाती, हर सतह पर और हर पल वे घटनाएँ घटती रहती हैं। इन घटनाओं को लेकर सोचना और उनसे सीख प्राप्त करना यही आत्मा का आहार है। जो इंसान अपनी चेतना और समझ का इतना विकास कर ले कि उसे आस-पास की घटनाओं में ईश्वरीय चमत्कार दिखाई दें, जो उसके लिए ईश्वर को याद दिलाने का माध्यम बन जाएँ तो ऐसे इंसान ने मानो अपनी आत्मा के लिए ईश्वरीय आहार का एक स्रोत प्राप्त कर लिया। उसकी आत्मा इस स्रोत से अपने स्वास्थ्य के लिए आहार प्राप्त करती रहेगी, यहाँ तक कि वह अपने ईश्वर से जा मिले।

मौलाना वहीदुद्दीन ख़ान

तज़्किया : इस्लाम में

तज़्किया नकारात्मक प्रभावों से अपने आपको बेअसर करके जीवन व्यतीत करना है, जो आदमी को सीधे रास्ते से हटाने वाले हैं।

क़ुरआन में पैग़ंबर[1] के चार काम बताए गए हैं, उनमें से एक काम तज़्किया-ए-नफ़्स है (2:129)। इससे तज़्किये की महत्ता का पता चलता है। इस्लाम के अनुयायियों के लिए आवश्यक है कि वे तज़्किया-ए-नफ़्स को अपने जीवन में विशेष महत्ता दें। इसी तरह दाअी[2] और समाज-सुधारक के लिए आवश्यक है कि वह अपने संघर्ष में तज़्किये के काम को विशेष महत्व के साथ शामिल करे।

तज़्किये का अर्थ है शुद्धिकरण (purification) यानी पवित्र करना, मन की उत्तेजना और शैतान के प्रलोभनों से अपने आपको बचाना, लोगों की ओर से होने वाले दुखद अनुभवों के अवसरों पर अपने आपको नकारात्मक प्रतिक्रियाओं (negative reaction) से बचाना, उन उकसाने वाले नकारात्मक प्रभावों से अपने आपको बेअसर करके जीवन व्यतीत करना, जो आदमी को सीधे रास्ते से हटाने वाले हैं इत्यादि।

असल यह है कि इंसान को ईश्वर ने सही स्वभाव के साथ पैदा किया है, लेकिन सांसारिक जीवन में बार-बार ऐसा होता है कि विभिन्न बाहरी प्रभावों के अंतर्गत इस सही स्वभाव पर पर्दा पड़ जाता है। आदमी को चाहिए कि वह ऐसे बाहरी प्रभावों को पहचाने और अपने आपको निरंतर उससे बचाता रहे।

---

[1] ईशदूत, ईश्वर द्वारा नियुक्त व्यक्ति जिसने ईश्वर का संदेश लोगों तक पहुँचाया।

[2] अपनी इच्छा से ईश्वर के संदेश को लोगों तक पहुँचाने वाला व्यक्ति।

पैग़ंबर का काम यह है कि वह लोगों को इस तज़्किये के सिद्धांत की जानकारी दे। वह इस दृष्टि से निरंतर लोगों का मार्गदर्शन करे, इसी के साथ वह इस पहलू से लोगों के लिए एक व्यावहारिक उदाहरण बन जाए।

पैग़ंबर ने तज़्किये के इस काम को अपने समय के लोगों के बीच सीधे रूप से फलीभूत किया। बाद की पीढ़ी के लिए पैग़ंबर का यह काम अप्रत्यक्ष (indirectly) रूप से जारी है। पैग़ंबर की बातों और कार्यों का पूरा रिकॉर्ड पैग़ंबर के कथन, जीवनी और उनके साथियों के कथन एवं जीवनी की पुस्तकों में मौजूद है।

बाद के लोगों का काम यह है कि वे इस लिखित रिकॉर्ड को पढ़कर उससे मार्गदर्शन प्राप्त करें। जो लोग ख़ुद पढ़ सकते हैं, वे ख़ुद ही पढ़ें और जो लोग ख़ुद नहीं पढ़ सकते, उनको धार्मिक विद्वान उपदेश और दीक्षा के माध्यम से तज़्किये के इस कोर्स को अपने जीवन में अपनाने की प्रेरणा देते रहें।

तज़्किये की हक़ीक़त

तज़्किये को मानसिक विकास (psychological development) या बौद्धिक विकास (intellectual development) भी कहा जा सकता है।

पैग़ंबर के कर्तव्यों में से एक कर्तव्य वह है, जिसके लिए क़ुरआन में तज़्किये का शब्द आया है। हर मोमिन[3] की यह अहम ज़रूरत है कि वह अपना तज़्किया करे। तज़्किये के बिना वह उच्च व्यक्तित्व नहीं बनता, जिसे क़ुरआन में दिव्य व्यक्तित्व (divine personality) कहा गया है (3:79)। हक़ीक़त यह है कि तज़्किया ही किसी इंसान के लिए स्वर्ग में जाने का माध्यम बनेगा। (20:76)

[3] सच्ची निष्ठा से ईश्वर के आदेशों का पालन करने वाला ईश्वरभक्त।

तज़्किया : आत्मा का शुद्धिकरण

तज़्किये का शाब्दिक अर्थ विकास (growth) है। इस 'विकास' का एक सांसारिक उदाहरण पेड़ है। पेड़ एक बीज के विकसित होने का परिणाम है। एक बीज अनुकूल वातावरण पाकर बढ़ना शुरू करता है, यहाँ तक कि वह एक हरा-भरा पेड़ बन जाता है। यही मामला इंसानी तज़्किये का भी है। इस दृष्टि से तज़्किये को आध्यात्मिक विकास (spiritual development) या बौद्धिक विकास (intellectual development) भी कहा जा सकता है।

ईश्वर ने इंसान को बहुत-सी संभाव्य क्षमताओं (potential) के साथ पैदा किया है। इंसानी व्यक्तित्व की इन संभाव्य क्षमताओं को वास्तविक बनाने का नाम तज़्किया है। इस दृष्टिकोण से यह कहना सही होगा कि तज़्किये का अर्थ है ईश्वरीय बुनियादों पर इंसानी व्यक्तित्व का निर्माण।

आदमी जब ईमान[4] लाता है तो वास्तव में वह तज़्किये की यात्रा शुरू करता है, यहाँ तक कि धीरे-धीरे वह एक विशुद्ध इंसान या बौद्धिक और आध्यात्मिक (spiritual) रूप से विकसित व्यक्तित्व (developed personality) बन जाता है। यही वह इंसान है, जिसे परलोक के स्थायी स्वर्ग (eternal paradise) में प्रवेश मिलेगा।

तज़्किया किसी रहस्यमय चीज़ का नाम नहीं है। तज़्किये का माध्यम ध्यान (meditation) नहीं है, बल्कि तज़्किये का माध्यम चिंतन-मनन (contemplation) है। ख़ुद के बारे में और संपूर्ण सृष्टि के बारे में चिंतन-मनन करना और उनसे ईश्वर की अनुभूति (God realization) की मानसिक या बौद्धिक जीविका प्राप्त करना। यही वह प्रक्रिया है, जिससे आदमी के अंदर विशुद्ध व्यक्तित्व (purified personality) बनता है। तज़्किया एक मालूम हक़ीक़त है, न कि कोई नामालूम हक़ीक़त। यह तज़्किया इंसान को अपने प्रयास से प्राप्त होता है, किसी काल्पनिक बुज़ुर्ग या संत के रहस्यमय दिव्य प्रभाव से इसका कोई संबंध नहीं।

---

[4] ईश्वर द्वारा उसके पैग़ंबर के ज़रिये भेजे गए संदेश पर दृढ़ विश्वास।

तज़्किये का महत्व

तज़्किया न करने के कारण वे कितने बड़े नुक़सान में पड़ गए। यह अहसास तज़्किये की प्रक्रिया के लिए निःसंदेह एक शक्तिशाली प्रेरक है।

हदीस[5] की कई पुस्तकों में एक वर्णन है। सही मुस्लिम के शब्द यह हैं— क़यामत[6] के दिन जब स्वर्ग वाले स्वर्ग में चले हो जाएँगे और नरक वाले नरक में चले जाएँगे तो वहाँ मौत को बुलाया जाएगा। वह एक सफ़ेद मेढ़े के रूप में होगी। उसे स्वर्ग और नरक के बीच खड़ा किया जाएगा। फिर कहा जाएगा कि ऐ स्वर्ग वालो! क्या तुम लोग इसे पहचानते हो? वे उसे गर्दन उठाकर देखेंगे और कहेंगे कि हाँ, यह मौत है।

पैग़ंबरे-इस्लाम हज़रत मुहम्मद ने बताया कि उसके बाद नरक वालों से कहा जाएगा कि ऐ नरक वालो! क्या तुम लोग इसे पहचानते हो? वे सिर उठाकर उसको देखेंगे और कहेंगे कि हाँ, यह मौत है। आपने कहा कि इसके बाद आदेश दिया जाएगा और मौत को मौत दे दी जाएगी। फिर कहा जाएगा कि ऐ स्वर्ग वालो! अब तुम्हारे लिए हमेशा के लिए जीवन है, अब तुम्हारे लिए मौत नहीं और ऐ नरक वालो! अब तुम्हारे लिए हमेशा के लिए नरक है, अब तुम्हारे लिए मौत नहीं। (सही मुस्लिम, हदीस नं० 2,849)

तज़्किया क्या है? तज़्किये का अर्थ है अपने आपको एक विशुद्ध व्यक्तित्व बनाना, जो स्वर्ग के उत्कृष्ट माहौल में बसाए जाने के योग्य हो। क़यामत के दिन यह घटना सामने आएगी कि जब विशुद्ध लोग स्वर्ग में और अशुद्ध लोग नरक में भेज दिए जाएँगे तो उसके बाद यह घोषणा की जाएगी कि अब मौत का क़ानून समाप्त कर दिया गया है, अब दोनों दलों को हमेशा

---

[5] हज़रत मुहम्मद के कथन, कर्म एवं मार्गदर्शन।

[6] सृष्टि के विनाश और अंत का दिन।

के लिए अपने-अपने संसार में रहना है।

यह बड़ा विचित्र पल होगा। स्वर्ग वाले बहुत ख़ुश होंगे कि उन्हें हमेशा के लिए ख़ुशियों का संसार मिल गया। दूसरी ओर नरक वाले ऐसे अफ़सोस और पछतावे का अनुभव करेंगे, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। यह सोच उनके लिए एक अनंत और स्थायी यातना बन जाएगी कि अपना तज़्किया न करने के कारण वे कितने बड़े नुक़सान में पड़ गए। यह अहसास तज़्किये की प्रक्रिया के लिए निःसंदेह एक शक्तिशाली प्रेरक (motivation) है। उस समय यह अंतिम आशा भी उनका साथ छोड़ देगी कि संभवतया कभी हमारी मौत आए और हमें नरक के इस दर्दनाक दंड और पीड़ा से छुटकारा दे। यह स्वर्ग वालों के लिए हमेशा के लिए मिलने वाली ख़ुशी का पल होगा और नरक वालों के लिए हमेशा के लिए रंज और ग़म का पल होगा।

स्वर्ग : विशुद्ध व्यक्तित्व के लिए

स्वर्ग केवल उस इंसान के लिए है, जो वर्तमान संसार में अपना तज़्किया करे और एक विशुद्ध व्यक्तित्व के रूप में परलोक के संसार में पहुँचे।

क़ुरआन की सूरह ताहा में स्वर्ग के बारे में बताया गया है—

"स्वर्ग उस आदमी के लिए है, जो अपना तज़्किया करे।"

Paradise is for one who purifies himself. (20:76)

क़ुरआन की इस आयत के अनुसार स्वर्ग केवल उस इंसान के लिए है, जो वर्तमान संसार में अपना तज़्किया करे और एक विशुद्ध व्यक्तित्व (purified personality) के रूप में परलोक के संसार में पहुँचे। इस हक़ीक़त का क़ुरआन की कई आयतों में स्पष्ट रूप से वर्णन किया गया है। स्वर्ग में प्रवेश करने का निर्णय हर इंसान की अपनी-अपनी विशेषताओं के आधार पर किया जाएगा, न कि किसी समूह से संबंध रखने के आधार पर।

स्वर्ग उस इंसान के लिए है, जो अपने आपको पवित्र करे। पवित्र करना यह है कि इंसान लापरवाही के जीवन को छोड़ दे और जागरूक जीवन अपनाए। वह अपने आपको उन चीज़ों से बचाए, जो सत्य से रोकने वाली हैं। जब स्वार्थ रुकावट बनकर सामने आए तो वह उसकी उपेक्षा (ignore) कर दे। मन में लोभ और लालच उभरे तो वह उसे कुचल दे। अत्याचार और घमंड का स्वभाव जागे तो वह उसको अपने अंदर-ही-अंदर समाप्त कर दे इत्यादि।

तज़्किये का अर्थ है किसी चीज़ को प्रतिकूल (unfavourable) तत्वों से शुद्ध कर देना, ताकि वह अनुकूल वातावरण में अपनी स्वाभाविक ऊँचाई तक पहुँच सके। पैग़ंबर का एक महत्वपूर्ण काम तज़्किया है। पैग़ंबर का अंतिम प्रयास यह होता है कि ऐसे इंसान तैयार हों, जिनके हृदय ईश्वर से प्रेम के सिवा हर किसी के प्रेम से रिक्त हों। ऐसी आत्माएँ अस्तित्व में आएँ, जो मानसिक जटिलताओं से स्वतंत्र हों। ऐसे लोग पैदा हों, जो सृष्टि से वह ईश्वरीय जीविका पा सकें जिसे ईश्वर ने अपने मोमिन बंदों के लिए रख दिया है। स्वर्ग का मामला तज़्किये से जुड़ा हुआ है। तज़्किया ही स्वर्ग में प्रविष्ट होने की एकमात्र शर्त है। तज़्किये के बिना बिल्कुल भी किसी इंसान को स्वर्ग में प्रवेश मिलने वाला नहीं।

हदीस तज़्किये का साधन

जिस इंसान के घर में हदीस की पुस्तकों का एक संग्रह (collection) हो मानो उसके घर में ख़ुद पैग़ंबर बातचीत करता हुआ मौजूद है।

एक विद्वान ने कहा है— “जिस इंसान के घर में हदीस की पुस्तकों का एक संग्रह (collection) हो मानो उसके घर में ख़ुद पैग़ंबर बातचीत करता हुआ मौजूद है।”

ऊपर जिस विद्वान ने यह बात कही है, वह केवल रसूल की बातचीत के बारे में नहीं है, बल्कि अर्थ की दृष्टि से वह रसूल की संगत के अर्थ में भी है।

हज़रत मुहम्मद के कथन और मार्गदर्शन की जो बातें हदीस की पुस्तकों में आई हैं, वह केवल बातें नहीं हैं, बल्कि हर कथन की अपनी एक पृष्ठभूमि (background) है यानी हज़रत मुहम्मद किसी जगह पर थे, वहाँ एक परिस्थिति पैदा हुई। उस परिस्थिति की माँग के अनुसार आपने लोगों को उपदेश देते हुए बातें कीं। इस तरह आपका हर कथन किसी-न-किसी पृष्ठभूमि से जुड़ा हुआ है। आपका हर कथन किसी-न-किसी परिस्थिति को बताता है।

अगर इंसान हदीस के बारे में अपनी समझ को इतना ज़्यादा गहरा करे कि वह हदीस के साथ उसकी पृष्ठभूमि को अपनी सोच और कल्पना में ला सके, तो यह घटना उसके लिए मानो रसूल की संगत में पहुँचने के जैसी बन जाएगी। वह अनुभव करेगा कि मैं न केवल रसूल की बातों को पुस्तकों में पढ़ रहा हूँ, बल्कि उन बातों के बीच छिपी उन पृष्ठभूमि को भी अपने मन-मस्तिष्क में ताज़ा कर रहा हूँ। यह अनुभूति अगर आदमी के अंदर पूरी भावना के साथ उभर आए तो हदीस का अध्ययन उसके लिए रसूल की संगत में बैठने के जैसा हो जाएगा। इस तरह हदीस के बारे में उसका प्रभाव हज़ार गुना ज़्यादा बढ़ जाएगा।

इस पहलू से देखा जाए तो पता चलेगा कि हदीस को पढ़ने वाला केवल हदीस को पढ़ने वाला नहीं है, बल्कि वह मानो पैग़ंबर के साथियों के साथ पैग़ंबर की संगत में बैठने वाला है। हदीस के अध्ययन की यह एक रचनात्मक शैली है और रचनात्मक शैली में हदीस-ए-रसूल का अध्ययन निश्चित रूप से तज़्किये का सबसे बड़ा माध्यम है।

तज़्किया : एक लगातार प्रक्रिया

तज़्किया किसी वक़्ती प्रशिक्षण कोर्स का नाम नहीं, तज़्किया एक लगातार की जाने वाली प्रक्रिया का नाम है।

पैग़ंबरे-इस्लाम हज़रत मुहम्मद की पत्नी हज़रत आयशा हज़रत मुहम्मद के बारे में कहती हैं— "हज़रत मुहम्मद हर अवसर पर ईश्वर को याद करते थे।" (सही मुस्लिम, हदीस नं० 373)

इस कथन से तज़्किये के पैग़ंबरी तरीक़े का पता चलता है। थोड़े-से शाब्दिक अंतर के साथ इस कथन का अर्थ यह है— हज़रत मुहम्मद हर अवसर पर अपना तज़्किया किया करते थे। इससे पता चला कि तज़्किया किसी वक़्ती प्रशिक्षण कोर्स का नाम नहीं, तज़्किया एक लगातार की जाने वाली प्रक्रिया का नाम है। जब एक मोमिन सत्य की खोज करता है तो बौद्धिक जागरूकता के आधार पर उसका हाल यह होता है कि हर घटना और हर अनुभव उसके लिए तज़्किये का पॉइंट ऑफ रेफरेंस बन जाता है। इस तरह वह हर पल और हर सुबह व शाम तज़्किये का आहार प्राप्त करता रहता है। तज़्किये की यह प्रक्रिया उसकी अंतिम साँस तक जारी रहती है। जिस तरह शारीरिक शक्ति लगातार पोषण के द्वारा प्राप्त होती है, उसी तरह तज़्किया निरंतर प्रयास से प्राप्त होता है।

आम तौर पर यह समझा जाता है कि वक़्ती ट्रेनिंग कोर्स तज़्किये का माध्यम है यानी जिस तरह मदरसे में एक निर्धारित और सीमित कोर्स के माध्यम से धार्मिक शिक्षा प्राप्त की जाती है, उसी तरह तज़्किया भी एक सीमित अवधि में एक निर्धारित कोर्स के माध्यम से प्राप्त किया जाता है, लेकिन हक़ीक़त यह है कि ऐसा सोचना तज़्किये को कम समझना है।

तज़्किया एक लगातार की जाने वाली बौद्धिक प्रक्रिया के माध्यम से प्राप्त होता है, न कि किसी तरह के वक़्ती कोर्स के माध्यम से। तज़्किये के लिए एक जागरूक मस्तिष्क (awakened mind) की ज़रूरत होती है। तज़्किया एक विकासशील (progressive) प्रक्रिया है। वह किसी तरह के निष्क्रिय (stagnant) अभ्यास का परिणाम नहीं।

डी-कंडीशनिंग की प्रक्रिया

इंसान को चाहिए कि वह हर पल अपना निरीक्षक बना रहे। वह हर पल अपनी नकारात्मक भावना को सकारात्मक भावना में बदलता रहे।

तज़्किया एक लगातार चलने वाली प्रक्रिया है। वह हर सुबह व शाम जारी रहती है। इस मामले को हदीस में एक उदहारण के माध्यम से इस तरह बताया गया है—

"दिलों में ज़ंग लगता है, जैसे कि लोहे में ज़ंग लगता है, जबकि उस पर पानी पड़ जाए। पूछा गया कि ऐ ईश्वर के पैग़ंबर, उसको साफ़ करने का तरीक़ा क्या है? आपने बताया कि मौत को बहुत ज़्यादा याद करना और क़ुरआन का अध्ययन करना।" (अल-बैहिक़ी, शुअबुल ईमान, 1859)

इस हदीस-ए-रसूल में उदाहरण के माध्यम से एक मनोवैज्ञानिक हक़ीक़त को बताया गया है। वह यह कि समाज के अंदर रहते हुए इंसान को बार-बार ऐसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, जो उसके अंदर नकारात्मक भावनाएँ (negative thinking) पैदा करती हैं। उदाहरण के लिए— क्रोध, घृणा, हिंसा, प्रतिशोध इत्यादि। आदमी को चाहिए कि वह इन भावनाओं को तुरंत समाप्त कर दे। अगर ऐसा न किया जाए तो नकारात्मक भावनाएँ इंसान के मन का एक स्थायी हिस्सा बन जाएँगी, यहाँ तक कि उनको दूर करना लगभग असंभव हो जाएगा।

मानव-मस्तिष्क के दो बड़े हिस्से हैं— चेतन मन (conscious mind) और अवचेतन मन (sub conscious mind)। प्राकृतिक व्यवस्था के अंतर्गत कोई नकारात्मक भावना पहले मस्तिष्क के चेतन हिस्से में प्रवेश करती है और अगर इसे तुरंत मस्तिष्क से निकाला न जाए तो यह धीरे-धीरे मस्तिष्क के अवचेतन हिस्से में पहुँच जाती है, जहाँ से इसे निकालना एक कठिन काम हो जाता है। इंसान को चाहिए कि वह हर पल अपना निरीक्षक बना रहे। वह हर पल अपनी नकारात्मक भावना को सकारात्मक भावना में बदलता रहे यानी वह अपने कंडीशंड माइंड की डी-कंडीशनिंग करे। वह अपने मस्तिष्क की सफ़ाई करके उसकी गंदगी को समाप्त करता रहे। इस सफ़ाई या डी-कंडीशनिंग का माध्यम है अपनी मौत को बार-बार याद करना और क़ुरआन की रोशनी में जीवन के परिणाम पर चिंतन-मनन करते रहना।

तज़्किया : आध्यात्मिक आहार

इंसान के आस-पास हर समय घटनाएँ घट रही हैं। इन घटनाओं को लेकर सोचना और उनसे सीख प्राप्त करना यही आत्मा का आहार है।

शरीर का एक आहार है। यह आहार शरीर को पहुँचाया जाए तो शरीर स्वस्थ हो जाएगा। इसी तरह आत्मा का भी एक आहार है। यह आहार जब आत्मा को पहुँचाया जाता है तो आत्मा स्वस्थ हो जाती है। इसी प्रक्रिया का नाम तज़्किया-ए-नफ़्स है और इसी स्वस्थ आत्मा को निर्मल और विशुद्ध आत्मा कहा जाता है।

क़ुरआन के अनुसार आत्मा का यह आहार सोच-विचार है। (3:191)

आदमी के आस-पास हर समय कुछ घटनाएँ घट रही हैं। सामाजिक, ऐतिहासिक और कायनाती, हर सतह पर और हर पल वे घटनाएँ घटती रहती हैं। इन घटनाओं को लेकर सोचना और उनसे सीख प्राप्त करना यही आत्मा

का आहार है। जो इंसान अपनी चेतना और समझ को इतना जगाए कि उसे आस-पास की घटनाओं में ईश्वरीय चमत्कार दिखाई दें, जो उसके लिए ईश्वर को याद दिलाने का माध्यम बन जाएँ तो ऐसे इंसान ने मानो अपनी आत्मा के लिए ईश्वरीय आहार का एक स्रोत प्राप्त कर लिया। उसकी आत्मा इस स्रोत से अपने स्वास्थ्य के लिए आहार प्राप्त करती रहेगी, यहाँ तक कि वह अपने ईश्वर से जा मिले।

तज़्किये का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम यह है कि अपने अंदर सीखने के स्वभाव को जगाया जाए। सीखने का स्वभाव ही मानो तज़्किये का धरातल है। यही वह धरातल है, जिस पर तज़्किये की फ़सल उगती है। किसी और स्थान पर इसको उगाना ऐसा ही है, जैसे पत्थर की चट्टान पर एक हरा-भरा पेड़ उगाने का प्रयास करना।

तज़्किये का माध्यम ईश्वरीय आहार है, न कि रिज़्के-शेख़। तज़्किया उस प्रक्रिया का परिणाम है, जो बंदे और ईश्वर के बीच मानसिक संबंध के माध्यम से सीधे तौर पर स्थापित होता है। तज़्किया किसी मध्यस्थ के माध्यम से नहीं मिलता। तज़्किया अपनी हक़ीक़त की दृष्टि से एक ईश्वरीय देन है, न कि एक मानवीय देन। तज़्किया वह उपहार है, जो किसी इंसान को सीधे ईश्वर से मिलता है। किसी इंसान की मध्यस्थता से जो तज़्किया मिले, वह कुछ और हो सकता है, लेकिन वह तज़्किया नहीं हो सकता।

इबादत में नई रीति मान्य नहीं

इबादत के मामले में शाब्दिक नुकतों के आधार पर नई बात या नई रीति को शुरू करना बौद्धिक दृष्टि से अवैज्ञानिक और धार्मिक दृष्टि से अस्वीकाम तथा दुःसाहस है।

एक विद्वान किसी प्रसिद्ध सूफ़ी के आश्रम में गए। वहाँ उन्होंने देखा कि लोग ऊँचे स्वर में जाप कर रहे हैं और साथ में दूसरे सूफ़ी रीति-रिवाज में व्यस्त हैं। उस विद्वान ने कहा कि हदीस में आया है कि जिस किसी ने भी हमारे दीन में कोई नई बात निकाली, जो उसमें न हो तो वह रद्द करने योग्य है।

(सही अल-बुख़ारी, हदीस नं० 2,697)

उस विद्वान ने कहा कि यह सूफ़ी रीति-रिवाज जो आपके यहाँ चलन में हैं, वह पैग़ंबर और पैग़ंबर के साथियों के युग में नहीं थे, इसलिए वह धर्म में नई बात या नई रीति का दर्जा रखते हैं। उन सूफ़ी संत ने उत्तर दिया कि हदीस में 'दीन में नई बात या नई रीति' की मनाही है, उसमें 'दीन के लिए नई रीति' की मनाही नहीं है और सूफ़ीवाद के ये तरीक़े 'दीन के लिए नई रीति' की हैसियत रखते हैं।

इस हदीस की यह व्याख्या ज्ञान से रिक्त व्याख्या है, यह हदीस के शब्दों से बिल्कुल भी नहीं निकलती। हदीस में यह शब्द आए हैं— 'जो उसमें न हो' यानी हज़रत मुहम्मद ने जो धर्म लोगों को बताया है, उस धर्म में वह मौजूद न हो। ऐसी स्थिति में वास्तविक समस्या भाषा विज्ञान या भाषाई तत्व की नहीं है, बल्कि वास्तविक समस्या यह है कि हज़रत मुहम्मद से जो धर्म हमें मिला है, उसमें बाद में की गई यह बढ़ोतरी वास्तव में मौजूद थी या मौजूद नहीं थी।

यह एक साबित हक़ीक़त है कि ऊँचे स्वर में जाप करने जैसी चीज़ें हज़रत

मुहम्मद के दिए हुए धर्म में मौजूद नहीं और जब वे हज़रत मुहम्मद के बताए हुए धर्म में मौजूद नहीं हैं तो भाषा विज्ञान और भाषाई तत्व जैसे नुकतों के माध्यम से उसको हज़रत मुहम्मद के धर्म में शामिल करना केवल नई रीति (बिदआत) को निकालने का दुःसाहस है। इस तरह के नुकते ऐसी वृद्धि के लिए स्वीकार करने योग्य उचित कारण नहीं।

धार्मिक विद्वानों की इस बात पर आम सहमति है कि इबादत[7] में किसी भी तरह का अनुमान नहीं यानी इबादत के मामले में केवल अनुसरण और पालन करना है, इसमें कोई नई बात या नई रीति को जोड़ना नहीं। इबादत के मामले में कोई सबूत या निष्कर्ष केवल क़ुरआन और हदीस के स्पष्ट कथन के आधार पर स्थापित हो सकता है, उसे शाब्दिक नुकतों के आधार पर स्थापित नहीं किया जा सकता। इबादत के मामले में शाब्दिक नुकतों के आधार पर नई बात या नई रीति को शुरू करना बौद्धिक दृष्टि से ज्ञान से रिक्त और धार्मिक दृष्टि से अत्यंत अस्वीकार्य दुःसाहस है।

तज़्किया : हर समय

अगले संसार में केवल आज के कर्मों का फल पाना है,
न कि दोबारा कोई कर्म करना।

आम तौर पर यह समझा जाता है कि तज़्किये का एक वक़्ती कोर्स है या कुछ विशेष शब्द या वाक्यांश हैं, जिनको निर्धारित समय पर पढ़ लिया जाए, लेकिन यह तज़्किये का अस्वाभाविक या रस्मी तरीक़ा है और कोई भी चीज़ इस तरह के वक़्ती तरीक़ों के माध्यम से प्राप्त नहीं होती।

---

[7] ईश्वर के सामने स्वयं को पूर्ण रूप से उसकी इच्छानुसार समर्पित करना।

हक़ीक़त यह है कि जिस तरह आदमी हर समय साँस लेता है, साँस लेने का कोई वक़्ती तरीक़ा नहीं, इसी तरह तज़्किया भी एक लगातार चलने वाली प्रक्रिया है। वास्तविक तज़्किया केवल वही है, जो हर समय जारी रहे। उदाहरण के लिए— एक फ़ारसी शायर का शे'र है, जिसका अनुवाद यह है—

'मुझ ग़रीब की क़ब्र पर न कोई चराग़ है और न कोई फूल,
इसलिए मेरी क़ब्र पर न परवाना नृत्य करता है और न
किसी बुलबुल के चहकने की आवाज़ आती है'

यह शे'र आपको याद आया तो आप सोचने लगे कि शायर कितनी ज़्यादा बड़ी भूल में पड़ा हुआ है। वह समझता है कि उसके मरने के बाद उसकी क़ब्र पर कोई चराग़ और कोई फूल नहीं, इसलिए वहाँ न कोई परवाना आता और न ही कोई बुलबुल। हालाँकि हक़ीक़त यह है कि मरने के बाद आदमी एक और संसार में पहुँच गया, जहाँ की माँग वर्तमान संसार से अलग हैं, जहाँ सफलता के लिए उससे अलग एक और योग्यता की ज़रूरत है, जो वर्तमान संसार में उसके काम आ रही थी। साथ ही यह कि अगले संसार में दोबारा तैयारी का कोई अवसर नहीं। अगले संसार में केवल आज के कर्मों का फल पाना है, न कि दोबारा कोई कर्म करना।

इस सोच का परिणाम यह होगा कि जो शे'र केवल कवि-सम्मेलन का एक विषय था, वही इंसान के जीवन के लिए एक भूचाल बन जाएगा। वह इस तैयारी में लग जाएगा कि वह अपने अंदर एक ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण करे, जो मौत के बाद आने वाले संसार के जीवन में उसके काम आए, जो परलोक के संसार में उसे सफलता दिलाने वाला हो।

यह सोचकर वह ख़ुद अपने आप पर बीतने वाले हालात के बारे में सोचने लगेगा, न कि क़ब्र पर गुज़रने वाले हालात के बारे में।

ग़लती के बाद आत्मनिरीक्षण

आत्मनिरीक्षण से इंसान का मन-मस्तिष्क जागरूक होता है और वह इंसान को बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास की ओर ले जाता है।

तज़्किये का एक बहुत बड़ा माध्यम आत्मनिरीक्षण (introspection) है। आत्मनिरीक्षण के माध्यम से आदमी का मन-मस्तिष्क जागरूक होता है, इंसान के व्यक्तित्व में हलचल पैदा होती है। उसके अंदर अपने में सुधार करने की उमंग जागती है। इस तरह आत्मनिरीक्षण इंसान को बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास की ओर ले जाता है।

उदाहरण के लिए— एक व्यक्ति ने आपके बारे में कोई ऐसी बात कह दी, जो आपको अप्रिय लगी। आपकी भावना भड़क उठी, आपने नकारात्मक प्रतिक्रिया की शैली में उसका उत्तर दिया। कुछ समय बाद आपके अंदर पछतावे (repentance) की भावना पैदा हुई, आपने अपने व्यवहार पर पुनर्विचार किया। आपने सोचा कि इस तरह मैं अपने अंदर एक नकारात्मक व्यक्तित्व बना रहा हूँ। ऐसा नकारात्मक व्यक्तित्व मौत के बाद के जीवन में मेरे लिए बहुत ज़्यादा हानिकारक सिद्ध होगा। ऐसा नकारात्मक व्यक्तित्व मुझे स्वर्ग में प्रवेश करने के लिए अयोग्य बना देगा।

आपने सोचा कि क़ुरआन के अनुसार स्वर्ग वालों का व्यवहार शांति वाला व्यवहार होगा। वहाँ ऐसे लोग बसाए जाएँगे, जो पारस्परिक जीवन में शांति और प्रेम के साथ रहने की योग्यता रखते हों। ऐसी स्थिति में अगर मैंने अपने अंदर ऐसा व्यक्तित्व बनाया, जिसके अंदर सहनशीलता (tolerance) न हो, जो आक्रोशित और उग्र हो जाने वाला हो, जिसके अंदर मित्रतापूर्ण स्वभाव (friendly behaviour) की योग्यता न पाई जाती हो, ऐसा व्यक्ति स्वर्ग में जाने के लिए अयोग्य घोषित कर दिया

जाएगा। वह हमेशा की ख़ुशियों और सफलता से वंचित रहेगा।

यह सोच आपके लिए एक रचनात्मक धमाका सिद्ध होगी। आप ख़ुद अपने आपको जाँचने वाले बन जाएँगे। आपके अंदर अपने सुधार की गंभीर मनोवृत्ति पैदा हो जाएगी।

अपने आत्मनिरीक्षण का यह स्वभाव तज़्किये का सबसे बड़ा माध्यम है। तज़्किया हमेशा आंतरिक सोच के माध्यम से प्राप्त होता है, न कि बाहरी तरह की किसी कार्यवाही के माध्यम से। तज़्किया वह प्रक्रिया है जिसमें इंसान ख़ुद ही अपने आपको शुद्ध करने वाला बनता है, वह ख़ुद ही शिष्य होता है और ख़ुद ही अपना गुरु भी।

हृदय पर आधारित, बुद्धि पर आधारित

अपनी बुद्धि का प्रयोग करते हुए ज़मीन और आसमान (सृष्टि) पर सोच-विचार करो। उसमें तुम ईश्वर की निशानियाँ देखोगे।

क़ुरआन की सूरह आले-इमरान के अंतिम भाग (3:190-194) को पढ़ें। इस भाग में बुद्धि वालों को संबोधित करते हुए कहा गया है कि अपनी बुद्धि का प्रयोग करते हुए ज़मीन और आसमान (सृष्टि) पर सोच-विचार करो। उसमें तुम ईश्वर की निशानियाँ देखोगे। उसके माध्यम से तुम अपने रचयिता को पहचानोगे। उसके माध्यम से तुम्हें ईश्वर की सृष्टि-निर्माण योजना (creation plan of God) का ज्ञान प्राप्त होगा। उसके माध्यम से तुम स्वर्ग और नरक की खोज कर लोगे। उसके माध्यम से तुम्हें पैग़ंबर की महत्ता का पता चलेगा। कहने का अर्थ यह कि वे सभी चीज़ें जिनका संबंध प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से तज़्किये से है, उन सबको इस भाग में सृष्टि पर सोचने-विचारने से अवगत कराया गया है।

दूसरे शब्दों में यह कि क़ुरआन के अनुसार तज़्किया, बुद्धि पर आधारित (mind based) तज़्किया है, न कि हृदय पर आधारित (heart based) तज़्किया। 'हृदय' के संबंध में क़ुरआन और हदीस में जो शब्द आए हैं, वह साहित्यिक अर्थ में हैं, न कि वैज्ञानिक अर्थ में।

बाद के युग में सूफ़ी-प्रभाव से मुसलमानों में हृदय पर आधारित तज़्किये का विचार प्रचलित हो गया। इस विचार के अंतर्गत यह समझ लिया गया कि इंसान का हृदय सभी ईश्वरीय हक़ीक़तों का भंडार है। ध्यान (meditation) के माध्यम से उस भंडार तक पहुँचो और फिर तुम्हें वह चीज़ प्राप्त हो जाएगी, जिसे इस्लाम में तज़्किया कहा गया है, लेकिन हृदय पर आधारित तज़्किये के इस विचार का स्रोत क़ुरआन नहीं था, बल्कि उसका स्रोत इतिहास था। प्राचीन युग से चूँकि हृदय पर आधारित आध्यात्मिकता का विचार लोगों के बीच चला आ रहा था, इसलिए इस परंपरा के प्रभाव के अंतर्गत लोगों ने इसे इस्लाम में शामिल कर दिया।

आधुनिक विज्ञान ने वह वैज्ञानिक आधार उपलब्ध करा दिया है, जिसके अंतर्गत इस्लामी तज़्किये को दोबारा मस्तिष्क या बुद्धि पर आधारित तज़्किये के रूप में जीवित किया जाए। आधुनिक खोजों से यह सिद्ध हो चुका है कि इंसान का हृदय रक्त के प्रसार के लिए केवल एक पंप (pump) का काम करता है, हृदय के अंदर सोचने की क्षमता मौजूद नहीं। सोचने की क्षमता पूर्ण रूप से केवल मस्तिष्क में है। इंसान के जीवन के सभी काम सोचने के माध्यम से ही अस्तित्व में आते हैं। तज़्किये का मामला भी इससे अलग कोई बाहर का मामला नहीं है। तज़्किये का उद्देश्य भी मस्तिष्क की सतह पर सोचने के माध्यम से प्राप्त होता है, न कि हृदय पर काल्पनिक ध्यान लगाने से। हृदय पर ध्यान लगाना उतना ही ज़्यादा निराधार (baseless) है, जितना कि तज़्किये को प्राप्त करने के लिए नाख़ून या बाल पर ध्यान लगाना।

मार्गदर्शक की ज़रूरत

तज़्किये के लिए मार्गदर्शक या गुरु अनिवार्य रूप से आवश्यक है, लेकिन मार्गदर्शक का महत्व व्यावहारिक दृष्टि से है, न कि श्रद्धा की दृष्टि से।

तज़्किये का माध्यम वास्तव में यह है कि इंसान क़ुरआन पर विचार करे, वह हदीस का अध्ययन करे, वह पैग़ंबर के साथियों के जीवन से मार्गदर्शन प्राप्त करे। यह तज़्किये का सैद्धांतिक स्रोत है। उसकी यह हैसियत हमेशा के लिए बनी रहेगी। इसके अलावा तज़्किया प्राप्त करने की एक व्यावहारिक शर्त भी है और वह है अपने युग के किसी मार्गदर्शक या गुरु की खोज करना और उसके ज्ञान और उसके अनुभवों से लाभ उठाना। इंसान को जब कोई मार्गदर्शक मिल जाए तो उसको चाहिए कि वह बिना शर्त उसको अपना मार्गदर्शक बना ले। मार्गदर्शक को शर्त के साथ मानना तज़्किये के रास्ते में एक रुकावट है, न कि सहायक।

जब एक व्यक्ति यह कहे कि मैंने फलाँ व्यक्ति को बिना किसी शर्त के अपना मार्गदर्शक मान लिया, तो इसका अर्थ अंधा अनुयायी बनना नहीं होता, इसका अर्थ केवल यह होता है कि बौद्धिक विकास के परिणामस्वरूप दो लोगों का साझा रुझान (wavelength) या साझा दृष्टिकोण एक हो गया। यह मानसिकता के आपस में समान होने की घटना है, न कि बौद्धिक अनुसरण (follow) का मामला। सत्य यह है कि किसी भी मामले की हक़ीक़त केवल एक ही होती है, इसलिए जब दो व्यक्ति असल हक़ीक़त तक पहुँच जाएँ तो स्वाभाविक रूप से उनके बीच बौद्धिक समानता पैदा हो जाती है। दोनों एक-दूसरे के लिए वैचारिक दृष्टिकोण से जुड़वाँ (intellectual twin) बन जाते हैं।

तज़्किये के लिए मार्गदर्शक या गुरु अनिवार्य रूप से आवश्यक है,

लेकिन मार्गदर्शक का महत्व व्यावहारिक दृष्टि से है, न कि श्रद्धा की दृष्टि से। मार्गदर्शक का महत्व दरअसल ईश्वर के एक सामान्य तरीक़े के अंतर्गत है। ईश्वर के इस तरीक़े का वर्णन सूरह अज़-ज़ुख़रुफ़ (43:32) की एक आयत में इस तरह किया गया है—

"हमने एक को दूसरे पर ख़ासियत दी है, ताकि वे एक-दूसरे से काम लें।"

इस आयत का अर्थ यह है कि ईश्वर का यह तरीक़ा नहीं है कि वह हर इंसान को मार्गदर्शक की विशेषताओं के साथ पैदा करे। ईश्वर का तरीक़ा यह है कि वह एक इंसान को मार्गदर्शक बनाता है और दूसरों से यह चाहा गया है कि वे उसका अनुसरण करें। ईश्वर के तरीक़े के अनुसार यही जीवन की प्राकृतिक व्यवस्था है।

मार्गदर्शक का मामला भी ईश्वर के इसी तरीक़े के अनुसार है। ईश्वर अपनी विशेष व्यवस्था के माध्यम से किसी को मार्गदर्शक के स्थान पर खड़ा करता है, दूसरों का कर्तव्य यह होता है कि वह उसे पहचाने और उससे लाभ लेते हुए तज़्किये का उद्देश्य प्राप्त करे। जो लोग ऐसा न करें, वह मानो प्रकृति की इस परीक्षा में असफल हो गए।

मार्गदर्शक का मामला कोई रहस्यमय मामला नहीं। यह बुद्धि से संबंधित एक ज्ञात मामला है। सोच-विचार के माध्यम से इसको समझा जा सकता है। मार्गदर्शक से जो चीज़ मिलती है, वह कोई रहस्यमय 'दिव्य प्रभाव' नहीं है। वह वही चीज़ है, जिसे आम तौर पर प्रशिक्षण का लाभ कहा जाता है। मार्गदर्शक एक जीवित मार्गदर्शक होता है, न कि रहस्यमय अर्थों में कोई पूजनीय इंसान।

तज़्किये के लिए संपर्क का महत्व

तज़्किये के लिए मार्गदर्शक से विचार-विमर्श लगातार वांछित है। वक़्ती विचार-विमर्श से तज़्किये का लाभ प्राप्त नहीं हो सकता।

तज़्किये के लिए संगत एक सहायक माध्यम है। प्राचीन युग में संगत का केवल एक माध्यम था और वह है एक-दूसरे से डायरेक्ट मुलाक़ात। वर्तमान युग दूरसंचार और संपर्क का युग है। आज के युग में यह संभव हो गया है कि कोई व्यक्ति दूर रहते हुए भी अपने मार्गदर्शक या प्रशिक्षक से संगत का लाभ प्राप्त कर सके। इस आपसी संपर्क का माध्यम पत्र-व्यवहार, इंटरनेट और दूरसंचार इत्यादि हैं। इसी का एक माध्यम टेली-काउंसलिंग (tele counselling) भी है। अगर कोई व्यक्ति वास्तव में तज़्किये का चाहने वाला हो, तो ये चीज़ें उसके लिए संगत का प्रतिफल (alternate) बन जाएँगी।

इन्हीं आधुनिक साधनों में से एक प्रिंटिंग प्रेस है। प्रिंटिंग प्रेस ने इसको संभव बना दिया है कि प्रतिमाह या ग़ैर-प्रतिमाह पत्रिकाओं के माध्यम से लगातार तज़्किये का सामान प्राप्त किया जाता रहे। विषय से संबंधित प्रकाशित पुस्तकों का अध्ययन बार-बार किया जाए। इस विधि का महत्व ख़ुद क़ुरआन से पता चलता है। जैसे क़ुरान में कहा गया है—

“जिसने ज्ञान सिखाया क़लम से” (96:4)। इसका अर्थ यह है कि क़लम के माध्यम से लिखी हुई पुस्तकों से धर्म को ग्रहण करना।

अध्ययन का महत्व एक पहलू से संगत से भी ज़्यादा है। संगत में व्यक्ति किसी बात को अपने मार्गदर्शक से एक बार सुनता है, लेकिन पुस्तक के रूप में यह संभव होता है कि वह बार-बार उसका अध्ययन करे। वह बार-बार उसे सामने रखते हुए उस विषय पर सोच-विचार करे, वह उसको लेकर दूसरों

से उस पर चर्चा (exchange) करे। यह एक ऐसा लाभ है, जो केवल पुस्तकों के माध्यम से प्राप्त होता है।

तज़्किये के लिए संपर्क बहुत ही आवश्यक है यानी मार्गदर्शक से लगातार लाभ प्राप्त करते रहना, अपने मामले मार्गदर्शक को बताकर उनसे मार्गदर्शन प्राप्त करना। यह विचार-विमर्श सीधे रूप से संगत के माध्यम से भी हो सकता है और संचार के अन्य साधनों के माध्यम से भी। यह विचार-विमर्श लगातार वांछित (desirable) है। वक़्ती विचार-विमर्श से तज़्किये का लाभ प्राप्त नहीं हो सकता।

मध्यस्थता के बिना

तज़्किया हमेशा ईश्वर की सहायता और मार्गदर्शन से प्राप्त होता है। ईश्वर की कृपा प्राप्त करने के लिए किसी मध्यस्थ की ज़रूरत नहीं।

जाने-अनजाने में आम तौर पर लोगों का यह विचार है कि तज़्किये के लिए एक रहस्यमय माध्यम या साधन की ज़रूरत है— पूर्वजों का माध्यम, महापुरुषों का माध्यम, संत का माध्यम, बुज़ुर्गों का माध्यम, ईश्वर-भक्तों का माध्यम इत्यादि। माध्यम की इस रहस्यमय धारणा में वास्तव में ख़ुद माध्यम ही लक्ष्य बन जाता है, जबकि मार्गदर्शक (guide) की अवधारणा में वास्तविक उद्देश्य ईश्वर होता है और मार्गदर्शक की हैसियत केवल एक माध्यम की। सहारे की यह अवधारणा निश्चित रूप से निराधार है। तज़्किया, बिना किसी मध्यस्थ (mediator) के सीधे ईश्वर से संपर्क के माध्यम से प्राप्त होता है, कोई माध्यम इस मामले में किसी भी तरह से सहायक नहीं।

वास्तविक तज़्किया हमेशा ईश्वर की कृपा से प्राप्त होता है। ईश्वर की कृपा प्राप्त करने के लिए किसी मध्यस्थ की ज़रूरत नहीं। ईश्वर की कृपा हर

इंसान तक सीधे तौर पर पहुँचती है। इसकी शर्त केवल एक है और वह है सच्चे अर्थों में तज़्किये का चाहने वाला बन जाना।

क़ुरआन की सूरह अल-बक़रह में बताया गया है— "जब मेरे बंदे मेरे बारे में तुमसे पूछें तो कह दो कि मैं निकट हूँ, पुकारने वाले की पुकार का उत्तर देता हूँ, जब वह मुझे पुकारता है, तो चाहिए कि मेरे बंदे मेरा आदेश मानें और मुझ पर विश्वास रखें, ताकि वे सीधा रास्ता पा लें।" (2:186)

क़ुरआन की इस आयत में 'निकट' शब्द का प्रयोग किया गया है। इससे पता चलता है कि तज़्किये का माध्यम ईश्वर की निकटता को पाना है, न कि किसी मध्यस्थ को पाना।

जो व्यक्ति अपना तज़्किया चाहता हो, उसको चाहिए कि वह अपने मन को जागरूक बनाकर ज़्यादा-से-ज़्यादा ईश्वर के निकट होने का प्रयास करे। इस उद्देश्य को पाने के लिए किसी का भी माध्यम कभी भी सहायक नहीं हो सकता। तज़्किया या तो सीधे ईश्वर से संपर्क के माध्यम से प्राप्त होता है या वह सिरे से प्राप्त होता ही नहीं।

हक़ीक़त यह है कि मध्यस्थ का विचार तज़्किये के रास्ते में रुकावट है। ईश्वर जब इंसान से गले की रग (क़ुरआन 50:16) से भी ज़्यादा निकट है तो ईश्वर से निकट होने के लिए किसी मध्यस्थ की क्या ज़रूरत! माध्यम या मध्यस्थ की अवधारणा रहस्यमय संबंध की आस्था पर स्थापित है, जबकि मार्गदर्शक या गुरु की अवधारणा बौद्धिक संपर्क की बुनियाद पर स्थापित होती है।

तज़्किये से पहले

तज़्किये का वास्तविक प्रेरक कमी की अनुभूति है। जो व्यक्ति जितना ज़्यादा अपने अंदर इस कमी को जानेगा, उतना ही ज़्यादा वह तज़्किये की ओर आकर्षित होगा।

तज़्किये का वास्तविक प्रेरक कमी की अनुभूति (destitution) है। जो व्यक्ति जितना ज़्यादा अपने अंदर इस कमी को जानेगा, उतना ही ज़्यादा वह तज़्किये की ओर आकर्षित होगा। ऐसा व्यक्ति स्वाभाविक रूप से अपनी इस कमी के पूरक की खोज करेगा और इसी खोज के परिणाम का नाम तज़्किया है।

इस खोज की शुरुआत ख़ुद अपने अस्तित्व से होती है। सबसे पहले इंसान बौद्धिक रूप से ख़ुद अपने अस्तित्व की खोज करता है। यह खोज उसके अंदर उत्सुकता पैदा करती है कि मुझे अस्तित्व में लाने वाला कौन है? इस तरह वह अपने रचयिता की खोज करता है। इसके परिणामस्वरूप उसके अंदर अपने रचयिता की महानता के प्रति एक प्रबल अनुभूति पैदा होती है। फिर वह सोचता है कि मैं पूर्ण रूप से एक ज़रूरतमंद (needy) इंसान हूँ। मैं ख़ुद अपनी शक्ति से अपनी कोई ज़रूरत पूरी नहीं कर सकता, इसके बाद मेरी ज़रूरत की सभी चीज़ें यहाँ पहले से ही मौजूद हैं— ज़मीन, पानी, हवा, ऑक्सीजन, प्रकाश, आहार और दूसरी अनगिनत चीज़ें, जिन्हें जीवन को सहारा देने वाली व्यवस्था-प्रणाली (life support system) कहा जाता है, वह सब-की-सब यहाँ एकतरफ़ा उपहार के रूप में मेरे लिए मौजूद हैं। इस खोज के बाद वह यह जानने का प्रयास करता है कि इन सभी उपहारों को देने वाला कौन है। इस तरह वह अपने रचयिता को खोज लेता है। इस खोज के परिणामस्वरूप उसके अंदर अपने रचयिता के प्रति अत्यंत प्रेम उत्पन्न हो जाता है।

इस तरह व्यक्ति की खोज उसे इस प्रश्न तक पहुँचाती है कि मेरा लक्ष्य क्या है? फिर उसे पता चलता है कि वर्तमान संसार में वह अपने इच्छित लक्ष्य को नहीं पा सकता। यह खोज उसे आख़िरकार स्वर्ग को चाहने वाला बना देती है, जहाँ वह अपने लक्ष्य को पा ले और अपनी सभी ज़रूरतों को पूरा कर सके।

इस तरह आदमी जब सोचता है तो वह खोज करता है कि उसे अपने जीवन के लिए एक भरोसेमंद मार्गदर्शन की ज़रूरत है। फिर यह होता है कि वह हर प्रयास के बाद ख़ुद अपने बल पर अपने लिए भरोसेमंद मार्गदर्शन प्राप्त नहीं कर सकता। इस खोज के बाद और ज़्यादा जानने की इच्छा उसे इस सत्य तक पहुँचाती है कि भरोसेमंद मार्गदर्शन का एकमात्र स्रोत पैग़ंबर है। इस तरह वह पूरे दिल की गहराई से पैग़ंबर को अपना मार्गदर्शक बना लेता है।

इन खोजों के बाद स्वाभाविक रूप से ऐसा होता है कि इंसान के अंदर विनम्रता (modesty) पैदा होती है। वह रचयिता की महानता में जीने लगता है। ईश्वर की रचनात्मक व्यवस्था उसके लिए ईश्वर को बार-बार याद करने का माध्यम बन जाती है। स्वर्ग उसके लिए सबसे बड़ा लक्ष्य बन जाता है। पैग़ंबर को वह अपने पूर्ण मार्गदर्शक के रूप में स्वीकार कर लेता है। यही वह ईश्वरीय अनुभूति के सारे अनुभव हैं, जिनके संग्रह का नाम तज़्किया है।

तज़्किया और आत्मनिरीक्षण

आत्मनिरीक्षण इस बात को सुनिश्चित करता है कि तज़्किये की प्रक्रिया बिना किसी रुकावट के इंसान के अंदर जारी रहेगी।

तज़्किया कोई एक बार की जाने वाली प्रक्रिया नहीं यानी ऐसा नहीं है कि कोई व्यक्ति एक बार कोई कोर्स करे और फिर वह हमेशा के लिए एक विशुद्ध इंसान बन जाए। हक़ीक़त यह है कि तज़्किया एक लगातार चलने वाली प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया इंसान के जीवन में लगातार चलती रहती है,

मौत से पहले वह कभी समाप्त नहीं होती।

तज़्किया ख़ुद पर चिंतन-मनन करने का काम है। इस काम में इंसान को ख़ुद अपना जाँचने वाला बनना पड़ता है। जो व्यक्ति तज़्किये का चाहने वाला हो, उसको चाहिए कि वह हर पल अपनी बातों और अपने कार्यों की जाँच-पड़ताल करता रहे। पूर्ण निष्पक्षता के साथ वह बार-बार अपने आपको जाँचता रहे। आत्मविश्लेषण की यह प्रक्रिया केवल उस व्यक्ति के अंदर शुरू होती है, जिसके अंदर आत्मनिरीक्षण (introspection) और पश्चाताप (repentance) की क्षमता पाई जाए।

वर्तमान संसार परीक्षा का संसार है। इस संसार को बनाने वाले ने इसे इस तरह बनाया है कि यहाँ हर पल इंसान को नई-नई जाँच का सामना करना पड़े, बार-बार वह मन की माँगों से प्रभावित हो, शैतान[8] के प्रलोभन उसे किसी अनावश्यक चीज़ में व्यस्त कर दें, वातावरण के प्रभाव से वह किसी ग़लत चीज़ का शिकार हो जाए इत्यादि। इस तरह की सभी चीज़ें तज़्किया प्राप्त करने के ख़िलाफ़ हैं।

इंसान को इतना ज़्यादा संवेदनशील (sensitive) होना चाहिए कि वह हर ऐसे अवसर पर जाग उठे, वह हर अवसर पर अपनी आत्मा के शुद्धिकरण के काम में लग जाए, वह हर ऐसी गंदगी के अवसर पर दोबारा अपने आपको पवित्र बनाए। यही तज़्किया है। इस तरह के आत्मनिरीक्षण के बिना कोई व्यक्ति विशुद्ध व्यक्तित्व का दर्जा प्राप्त नहीं कर सकता। आत्मनिरीक्षण से बौद्धिक विकास (intellectual development) होता है और बौद्धिक विकास इस बात को सुनिश्चित करता है कि तज़्किये की प्रक्रिया बिना किसी रुकावट के इंसान के अंदर जारी रहे।

---

[8] ईश्वर की आज्ञा न मानने वाला उपद्रवी, जिसे ईश्वर ने बहिष्कृत कर दिया और जो लोगों को ग़लत रास्ते पर ले जाता है।

तज़्किया और विनम्रता

जो इंसान मानसिक जटिलताओं से स्वतंत्र (complex free soul) हो, वही तज़्किये की श्रेणी तक पहुँचने में सफलता प्राप्त करता है।

फ़सल के लिए अनुकूल ज़मीन की ज़रूरत होती है। फ़सल हमेशा उपजाऊ ज़मीन पर उगती है, बंजर ज़मीन पर कभी फ़सल नहीं उगती। इसी तरह तज़्किये के लिए भी अनुकूल ज़मीन की ज़रूरत है। विनम्रता (modesty) तज़्किये के लिए अनुकूल ज़मीन है। जिस इंसान के अंदर विनम्रता का गुण होगा, उसके लिए तज़्किये को पाना आसान हो जाएगा। इसके विपरीत अहंकार तज़्किये के लिए एक प्रतिकूल ज़मीन है। जिस इंसान के अंदर अहंकार का स्वभाव हो, वह कभी भी तज़्किये के स्थान तक नहीं पहुँच सकता। इसका कारण यह है कि विनम्रता से इंसान के अंदर कमी की अनुभूति पैदा होती है। विनम्र इंसान का स्वभाव यह होता है कि मुझे कुछ और पाना है, जो मेरे अंदर नहीं है। इस अनुभूति का परिणाम यह होता है कि उसके सामने जब सत्य आता है तो वह बिना किसी रुकावट (reservation) के उसकी ओर दौड़ पड़ता है। वह निष्पक्ष उसकी जाँच-पड़ताल करता है। वह शीघ्र ही जान लेता है कि सत्य उसके लिए उसकी कमी की भरपाई है। वह सत्य को ख़ुद अपनी चीज़ समझकर उसे स्वीकार कर लेता है। यही गुण तज़्किये की आत्मा है।

इसके विपरीत मामला अहंकारी इंसान का है। अहंकारी इंसान की मानसिकता यह होती है कि मेरे पास पहले ही से सब कुछ मौजूद है, मुझे किसी से कुछ और लेने की ज़रूरत नहीं। इस मानसिकता के कारण वह बाहर की किसी चीज़ को लेने के लिए तैयार नहीं होता। वह सुधारक की बात को आसानी से रद्द कर देता है। उसका यह स्वभाव उसके लिए तज़्किये की प्राप्ति

में रुकावट बन जाता है। हक़ीक़त यह है कि तज़्किया एक लगातार की जाने वाली प्रक्रिया है। तज़्किये की यह प्रक्रिया केवल उस इंसान के अंदर जारी होती है, जो विनम्रता का स्वभाव रखता हो। विनम्रता की भावना इंसान के अंदर स्वीकार करने का स्वभाव पैदा करती है। ऐसा इंसान मानसिक जटिलताओं (complexes) से स्वतंत्र होगा और जो इंसान मानसिक जटिलताओं से स्वतंत्र हो, वही तज़्किये की श्रेणी तक पहुँचने में सफलता प्राप्त करता है।

मसनून अज़्कार

लोग केवल पैग़ंबर की ज़ुबान से निकले हुए शब्दों को जानते हैं, वे पैग़ंबर की भावनाओं या उनके मन की अवस्थाओं से अवगत नहीं हो पाते।

हदीस की पुस्तकों में ऐसे कथन आए हैं, जिनसे यह पता चलता है कि पैग़ंबर हज़रत मुहम्मद अलग-अलग समय पर कुछ शब्द पढ़ा करते थे, जिनको ज़िक्र और दुआ के शब्द कहा जाता है। ये शब्द आम तौर पर मसनून दुआ या मसनून अज़्कार के नाम से प्रसिद्ध हैं। आम तौर पर यह माना जाता है कि मसनून अज़्कार तज़्किये का सबसे बड़ा माध्यम हैं और तज़्किया यह है कि इंसान इन अज़्कार को याद कर ले और अलग-अलग विशेष अवसरों पर उनको दोहराता रहे। मसनून अज़्कार की यह अवधारणा एक कमतर सोच है।

मसनून अज़्कार वास्तव में आंतरिक अनुभूति है, न कि साधारण अर्थों में केवल मसनून शब्द। इस मामले में हक़ीक़त यह है कि पैग़ंबरे-इस्लाम हज़रत मुहम्मद अपनी उच्च ईश्वरीय अनुभूति के आधार पर रब्बानी अवस्था से डूबे रहते थे। आपकी यह आंतरिक अनुभूति अलग-अलग अवसरों पर आपकी ज़ुबान से निकल पड़ती थी।

आज जो लोग हदीस की पुस्तकों को पढ़ते हैं, वे केवल पैग़ंबर के शब्दों से अवगत होते हैं, वे पैग़ंबर की आंतरिक स्थिति से अवगत नहीं हो पाते। इस आधार पर वे शब्दों को ही वास्तविक समझ लेते हैं, क्योंकि आंतरिक स्थिति पुस्तक में दर्ज नहीं। मसनून अज़्कार की यह अवधारणा मसनून अज़्कार को कम आँकना है। वह मसनून अज़्कार का सही परिचय नहीं।

वास्तव में मसनून अज़्कार का अर्थ यह है कि इंसान अपनी चेतना को जगाए। वह लगातार सोच-विचार के माध्यम से अपने अंदर ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण करे, जो ईश्वरीय अनुभूति में जीने वाला हो। यह मानो मसनून अज़्कार से पहले की सुन्नत[9] है। आदमी को चाहिए कि वह मसनून अज़्कार से पहले की सुन्नत को अपने अंदर जीवित करे। इसके बाद उसकी ज़ुबान से ज़िक्र व दुआ के जो शब्द निकलेंगे, वही उसके लिए मसनून अज़्कार होंगे। इस तरह का ईश्वरीय व्यक्तित्व तैयार किए बिना जो व्यक्ति मसनून अज़्कार को दोहराए, वह केवल शब्दों का दोहराना होगा, न कि सच्चे अर्थों में मसनून अज़्कार को व्यवहार में लाना।

लोग जाने-अनजाने में यह समझते हैं कि मसनून अज़्कार ज़िक्र के पवित्र शब्द हैं, इन शब्दों में रहस्यमय रूप से कुछ विशेषताएँ छिपी हुई हैं, लेकिन यह सही नहीं। हक़ीक़त यह है कि मसनून अज़्कार दरअसल पैग़ंबर की आंतरिक अनुभूति को बताने वाले शब्द हैं, न कि साधारण अर्थों में केवल पैग़ंबराना शब्द।

---

[9] तरीक़ा, पद्धति, वह काम जो हज़रत मुहम्मद ने किया हो।

तज़्किया और दुआ

दुआ हमेशा एक मानसिक तूफ़ान के बाद किसी व्यक्ति की ज़ुबान से निकलती है। इसी मानसिक घटना का दूसरा नाम आत्मा की पवित्रता है।

दुआ क्या है? दुआ उस आंतरिक स्थिति को शब्दों में व्यक्त करने का नाम है, जो एक ओर अपने भक्तिभाव तो दूसरी ओर ईश्वर के पालनहार होने की खोज करने के बाद एक इंसान के अंदर पैदा होती है। मसनून दुआओं का मामला भी इससे अलग नहीं है।

मसनून दुआ मालूम मायनों में मसनून दुआ के शब्दों का नाम नहीं। मसनून दुआ अपनी हक़ीक़त की दृष्टि से ईश्वर को उसके गुणों के साथ खोजने का नाम है। ईश्वर की खोज जब शब्दों में ढल जाए तो यही वह दुआ है, जिसको मसनून दुआ कहा जा सकता है। एक हदीस में वर्णन है— "ईश्वर ने कहा कि मैं बंदे की सोच के साथ हूँ, तो उसको चाहिए कि वह मेरे बारे में अच्छा सोचे।" (अल-क़ैसरानी, 5/2793)

यह सोच क्या है? यह वास्तव में ईश्वर के गुणों में से किसी एक गुण की खोज करने का नाम है, जो व्यक्ति को यह अवसर दे कि वह ईश्वर के बारे में अच्छा सोचे, वह उससे अच्छाई माँगे। उदाहरण के लिए— क़ुरआन में बताया गया है—

"और उसने तुम्हें हर चीज़ में से दिया, जो तुमने माँगा...।" (14:34)

यह आयत किसी बंदे को दुआ का एक संदर्भ-बिंदु (point of reference) देती है, जिसके हवाले से वह ईश्वर की दया को उभार (invoke) सके। वह यह कहे कि ऐ मेरे ईश्वर, सांसारिक जीवन में मैं अपनी ज़रूरतों से परिचित भी न था कि मैं तुझसे उसकी याचना करूँ। तूने मेरी स्वाभाविक माँगों को याचना का दर्जा देकर मेरी सभी सांसारिक ज़रूरतों का प्रबंध कर दिया।

परलोक के मामले में मैं बार-बार तुझसे याचना कर रहा हूँ, अब तू मेरी दुआ को अनिवार्य दर्जा देकर परलोक में भी मेरी सभी इच्छाए पूरी कर दे।

इस तरह की एक दुआ हमेशा एक मानसिक तूफ़ान के बाद किसी व्यक्ति की ज़ुबान से निकलती है। इसी मानसिक घटना का दूसरा नाम तज़्किया है। तज़्किया और दुआ दोनों एक-दूसरे के लिए अनिवार्य हैं। जहाँ तज़्किये की घटना होगी, वहाँ दुआ भी अनिवार्य रूप से व्यक्त होगी और जब दुआ व्यक्त हो तो वह इस बात का सबूत होगा कि इससे पहले इंसान के अंदर तज़्किये की घटना घट चुकी है। तज़्किये के बिना दुआ नहीं और दुआ के बिना तज़्किया नहीं।

तज़्किये का बाहरी रूप

इबादत के बिना तज़्किये का दावा केवल एक झूठा दावा है, लेकिन इबादत का बाहरी रूप अपने आप तज़्किये की भावना को पैदा नहीं कर सकता।

तज़्किये का कोई बाहरी रूप नहीं। अगर तज़्किये का बाहरी रूप हो तो उसे पूरा करके इंसान जाने-अनजाने में यह समझ लेगा कि मैंने अपना तज़्किया कर लिया। इस तरह उसके अंदर संतुष्टि (contentment) का स्वभाव पैदा हो जाएगा। हालाँकि इस मामले में संतुष्टि का स्वभाव तज़्किये के लिए क़ातिल भावना की हैसियत रखता है। तज़्किये के लिए आवश्यक है कि इंसान के अंदर लगातार असंतुष्ट होने की अनुभूति पाई जाती हो। असंतुष्टि की भावना तज़्किये की प्रक्रिया को लगातार जारी रखने का कारण है, जबकि संतुष्टि की भावना तज़्किये की प्रेरणा को ख़त्म कर देती हैं।

तज़्किये का गहरा संबंध इबादत की निश्चित व्यवस्था से है। तज़्किया और इस्लामी इबादात दोनों एक-दूसरे के लिए अनिवार्य और अधीन हैं। दोनों

को एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। कोई भी इंसान यह नहीं कह सकता कि मेरा तज़्किया पूरा हो चुका है और अब मुझे इबादत की ज़रूरत नहीं, मगर इसका यह अर्थ नहीं कि इबादत के इस बाहरी रूप का पालन करने से अपने आप तज़्किये का उद्देश्य प्राप्त हो जाता है। ऐसा समझना एक अस्वाभाविक बात है। सही यह है कि इबादत तज़्किये की रूह (spirit) का एक बाहरी रूप है। वह अपनी हक़ीक़त की दृष्टि से तज़्किये को पाने का माध्यम नहीं। अगर किसी व्यक्ति के अंदर तज़्किये की रूह सही अर्थों में पैदा हो जाए तो अनिवार्य रूप से ऐसा होगा कि वह ईश्वर का इबादतगुज़ार[11] बन जाएगा।

इबादतगुज़ारी को तज़्किये से अलग नहीं किया जा सकता, इसलिए सारा ज़ोर तज़्किये की रूह पर देना चाहिए, न कि केवल इबादत के बाहरी स्वरूप पर। यह सही है कि इबादत के बिना तज़्किये का दावा केवल एक झूठा दावा है, लेकिन यह भी सही है कि इबादत का बाहरी रूप अपने आप तज़्किये की भावना को पैदा नहीं कर सकता।

अंतरात्मा : तज़्किये का मार्गदर्शक

अंतरात्मा की मौन आवाज़ हर अवसर पर उभरती है, लेकिन अहंकार उस आवाज़ को दबाकर उसे बेअसर बना देता है।

इंसान के अंदर प्राकृतिक रूप से एक हिस्सा (faculty) है, जिसे अंतरात्मा (conscience) कहा जाता है। यह अंतरात्मा एक ईश्वरीय शिक्षक है। वह इंसान के तज़्किये के लिए एक मार्गदर्शक का काम करती है। अंतरात्मा हर अवसर पर मौन भाषा में इंसान को बताती है— यह करो और

[11] इबादत करने वाला।

वह न करो। यह स्वभाव तज़्किये के अनुकूल है और वह स्वभाव तज़्किये के प्रतिकूल है। यह विशुद्ध व्यक्तित्व बनाने वाला स्वभाव है और वह अशुद्ध व्यक्तित्व बनाने वाला स्वभाव है इत्यादि, लेकिन अनुभव से पता चलता है कि अधिकांश लोगों का परिणाम यह होता है कि अंतरात्मा उनके तज़्किये के लिए एक मार्गदर्शक का काम नहीं करती। इसका कारण क्या है? इसका कारण यह है कि हर इंसान के अंदर अंतरात्मा के साथ एक और विपरीत हिस्सा मौजूद है। यह अहंकार (ego) है। इंसान अधिकांशतः मन और शैतान के प्रभाव के अधीन हो जाता है। वह अंतरात्मा को अपना काम नहीं करने देता। अंतरात्मा की मौन आवाज़ हर अवसर पर उभरती है, लेकिन अहंकार उस आवाज़ को दबाकर उसे बेअसर बना देता है।

तज़्किया चाहने वाले के लिए आवश्यक है कि वह इस सत्य को जाने। वह अपनी सोच-विचार की शक्ति को जागरूक रखे। वह हर अवसर पर अपने अहंकार को शून्य करता रहे। अहंकार को ज़ीरो करते ही यह होगा कि अंतरात्मा अपनी स्वाभाविक भूमिका निभाने लगेगी और तज़्किये के रास्ते पर इंसान की यात्रा बिना किसी भटकाव के जारी रहेगी।

अहंकार को ज़ीरो करने का यह काम इस मामले में निर्णायक भूमिका निभाता है, लेकिन यह काम कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के लिए नहीं कर सकता। हर व्यक्ति को ख़ुद यह काम करना है कि जैसे ही उसका अहंकार जागे, वह तुरंत चौकन्ना हो जाए और अपनी इच्छाशक्ति (willpower) का प्रयोग करते हुए अपने अहंकार को ज़ीरो कर दे।

तज़्किये का तरीक़ा

इंसान का एक अनोखा गुण यह है कि वह अपनी हर ग़लती का कारण ढूँढ़ लेता है और उसे सही बताने के लिए सुंदर शब्द पा लेता है।

कुछ लोगों ने तज़्किये की कई तरीक़े बताने का प्रयास किया है। इस बारे में उन्होंने तज़्किये के तरीक़ों की एक सूची भी तैयार की है, लेकिन हक़ीक़त यह है कि तज़्किये के तरीक़ों की कोई सूची नहीं। आप चाहे कितनी ही लंबी सूची बना लें, लेकिन कोई भी सूची तज़्किये के तरीक़ों की एक पूरी सूची नहीं बन सकती, कोई भी सूची तज़्किये के तरीक़ों के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती। सबसे लंबी सूची के बाद भी कुछ ऐसे अंश शेष रहेंगे, जो अनुभव के बाद यह साबित करेंगे कि यह सूची अधूरी सूची थी।

वास्तव में बात यह है कि तज़्किये का संबंध किसी सूची से नहीं है, बल्कि इंसान के अपने संकल्प से है। अगर व्यक्ति वास्तव में तज़्किये के मामले में गंभीर हो और वह निष्ठापूर्वक (determination) अपना तज़्किया करना चाहता हो तो वह अवश्य ही अपना तज़्किया करने में सफल हो जाएगा, लेकिन अगर आदमी इस मामले में पूरी तरह से गंभीर न हो और वह अपना तज़्किया करने के लिए चिंतित न हो तो कोई भी लेख या उपदेश उसका तज़्किया करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकता।

इंसान का एक अनोखा गुण यह है कि वह अपनी हर ग़लती को उचित सिद्ध करने का कारण ढूँढ़ लेता है। वह अपनी हर ग़लती को सही बताने के लिए सुंदर शब्द पा लेता है। ऐसी स्थिति में कोई भी मार्गदर्शक या शुभचिंतक उसका तज़्किया नहीं कर सकता। तज़्किये के लिए आवश्यक है कि इंसान ख़ुद अपने बारे में समझदारी के साथ निर्णय करे। उसका यह निर्णय इतना ज़्यादा दृढ़ हो कि वह हर हाल में उस पर डटा रहे। इस मामले में वह किसी भी कारण को अपने लिए बहाना न बनाए।

तज़्किये के मामले में असल चीज़ तज़्किये का संकल्प है। यह संकल्प इतना ज़्यादा दृढ़ होना चाहिए कि कोई भी चीज़ व्यक्ति को उससे हटा न सके। कोई भी आशंका उसके संकल्प को कमज़ोर न कर सके। इस मामले में वह किसी भी दबाव को स्वीकार करने पर सहमत न हो। उसका यह विचार हो— मुझे हर हाल में अपना तज़्किया करना है, चाहे मुझे इसका कोई भी व्यावहारिक या मानसिक मूल्य चुकाना पड़े।

तज़्किये का ज़्यादा प्रभावशाली तरीक़ा

इंसान अपने आपको इतना ज़्यादा समझदार इंसान बनाए कि उसके अंदर सीख लेने का गुण पैदा हो जाए।

तज़्किये का एक तरीक़ा यह है कि काल्पनिक नियम-सिद्धांत निश्चित कर दिए जाएँ और उन्हें लिखकर लोगों को पढ़ने के लिए दे दिया जाए। यह भी तज़्किये का एक तरीक़ा हो सकता है, लेकिन तज़्किये का ज़्यादा प्रभावी तरीक़ा यह है कि उसको किसी घटना या परिस्थिति से जोड़कर बताया जाए। इस दूसरे तरीक़े का एक रूप यह है कि उसके लिए एक जीवित मार्गदर्शक या तज़्किया करने वाला मौजूद हो। दूसरा तरीक़ा यह है कि इंसान ख़ुद अपनी चेतना को इतना ज़्यादा विकसित करे कि वह ख़ुद ही हर अनुभव और हर निरीक्षण में तज़्किये के पहलू की खोज करे और उसे मन-मस्तिष्क का हिस्सा बना ले।

हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी हज़रत मुहम्मद के एक साथी हैं। वे कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद अगर एक चिड़िया को हवा में अपने परों से उड़ते हुए देखते तो उससे आप हमे आध्यात्मिक शिक्षा देते।

(अत-तबक़ात इब्न साद, हदीस नं० 2,354)

यह वर्तमान परिस्थिति से जोड़कर तज़्किये की शिक्षा देने का एक उदहारण है।

तज़्किया प्राप्त करने का कोई संक्षिप्त तरीक़ा नहीं। हक़ीक़त यह है कि कोई भी संक्षिप्त तरीक़ा तज़्किया प्राप्त करने का प्रभावशाली माध्यम नहीं बन सकता। तज़्किये का प्रभावशाली तरीक़ा यह है कि आदमी अपने आपको इतना ज़्यादा समझदार बनाए कि उसके अंदर सीख लेने का गुण पैदा हो जाए। वह वर्तमान घटना को तज़्किये से जोड़कर उससे ईश्वरीय सीख प्राप्त कर सके। तज़्किये की सामग्री रोज़मर्रा के अनुभवों में होती है। रोज़मर्रा के अनुभवों को तज़्किये की दृष्टि से देखना सीख लीजिए, इसके बाद हर अनुभव और हर निरीक्षण आपके लिए तज़्किये का माध्यम बन जाएगा।

तज़्किये का माध्यम

इंसान अपनी सोच को सक्रिय करे, वह लगातार चिंतन-मनन के माध्यम से हर चीज़ के बाहरी स्वरूप में उसके अंदर छिपी सच्चाइयों की खोज करे।

तज़्किये का माध्यम क्या है? पारंपरिक रूप से कुछ चीज़ों को तज़्किये का माध्यम समझा जाता है—ऐच्छिक इबादत (voluntary prayers) करना, क़ुरआन का पढ़ना, मसनून अज़्कार, ध्यान करना, संगत, बुज़ुर्गों के जीवन की घटनाएँ इत्यादि। इस सोच का अर्थ तज़्किये को एक निर्धारित कोर्स या नियमावली (manual) जैसा मामला समझना है, लेकिन हक़ीक़त यह है कि तज़्किये का कोई निर्धारित कोर्स नहीं। तज़्किया एक जीवित घटना है, जीवित कर्म के माध्यम से ही उसे वास्तविक रूप में प्राप्त किया जा सकता है।

तज़्किये के उद्देश्य को प्राप्त करने का सही माध्यम यह है कि आदमी ईश्वरीय बातों में चिंतन-मनन करे, वह अपनी सोच को सक्रिय करे, वह लगातार चिंतन-मनन के माध्यम से हर चीज़ के बाहरी स्वरूप में उसके अंदर छिपी सच्चाइयों की खोज करे। यही खोज तज़्किये की इच्छा रखने वाले इंसान का आहार है।

उदाहरण के लिए— आपने एक चिड़िया को देखा। चिड़िया को देखकर आपको यह हदीस याद आई कि स्वर्ग वालों के हृदय चिड़िया के हृदय के समान होंगे।

इसके बाद आप अपने बारे में विचार करने लगे कि क्या मेरा हृदय भी चिड़िया के हृदय के समान है? क्या मैं भी उसी तरह की नकारात्मक सोच से रिक्त हूँ, जिस तरह चिड़िया का हृदय नकारात्मक सोच से रिक्त होता है? क्या मैं भी उसी तरह लोभ और लालच से बचा हुआ हूँ, जिस तरह चिड़िया लोभ और लालच से मुक्त होती है? क्या मैं भी उसी तरह हानि न पहुँचाने वाला इंसान हूँ, जिस तरह चिड़िया हानिरहित होती है? क्या मैं भी उसी तरह प्रकृति के नियमों का पालन करता हूँ, जिस तरह चिड़िया प्रकृति के नियमों का पालन करती है? यही सोच तज़्किये की वास्तविक आत्मा है। इस तरह की निरीक्षित सोच के बिना किसी इंसान का तज़्किया नहीं हो सकता।

तज़्किया अपनी हक़ीक़त की दृष्टि से 'अपनी रचना आप' करने का एक कर्म है। तज़्किये में इंसान को ख़ुद अपना शुद्धिकर्ता और शिक्षक बनना पड़ता है। किसी दूसरे व्यक्ति की संगत या किसी दूसरे व्यक्ति का प्रचार वास्तव में किसी के लिए प्रभावशाली नहीं हो सकता। दूसरा कोई व्यक्ति आपको आरंभिक मार्गदर्शन दे सकता है, लेकिन इस मार्गदर्शन को अंतिम लक्ष्य तक पहुँचाना आपका अपना काम है। तज़्किये के काम में किसी दूसरे व्यक्ति का हिस्सा अगर एक प्रतिशत है तो आपका अपना हिस्सा निन्यानवे प्रतिशत।

तज़्किया : मानसिक विकास

ईमान अगर इस्लाम में दाख़िल होने का नाम है, तो तज़्किया ईमान को विकसित करने का नाम।

तज़्किये का वास्तविक अर्थ शुद्धिकरण है। इसी से इसमें एक और अर्थ शामिल हुआ है और वह है 'बढ़ना' (growth)। इस दृष्टि से यह कहना सही

होगा कि तज़्किये का अर्थ वही चीज़ है, जिसे बौद्धिक विकास या आत्मिक विकास कहा जाता है।

मस्तिष्क कोई निष्क्रिय (stagnant) चीज़ नहीं, वह एक लगातार बढ़ने वाली चीज़ है। वह किसी पेड़ की तरह लगातार बढ़ता रहता है। इसी प्रक्रिया को क़ुरआन में—"ईमान को और बढ़ाना" (48:4) कहा गया है। ईमान को और बढ़ाने का अर्थ चेतना (awareness) को और बढ़ाना है और चेतना के बढ़ने का दूसरा नाम बौद्धिक विकास है। सच्चा ईमान वही है, जो कभी निष्क्रियता का शिकार न हो, जो विश्वास और ईश्वर पर ईमान की दृष्टि से लगातार बढ़ता रहे।

यह तज़्किया या बौद्धिक विकास किस तरह होता है? इसका माध्यम सोच-विचार (contemplation) है। यह सोच-विचार अपने आपमें एक लगातार चलने वाली प्रक्रिया है। क़ुरआन और हदीस पर चिंतन-मनन, पैग़ंबर के जीवन-चरित्र पर चिंतन-मनन, पैग़ंबर के साथियों के जीवन पर चिंतन-मनन, दूसरे मानवीय विषयों पर चिंतन-मनन, सृष्टि पर चिंतन-मनन, यहाँ तक कि कण-कण से लेकर सूरज तक हर चीज़ पर चिंतन-मनन। इसके अलावा गंभीर विचार-विमर्श के दौरान भी चिंतन-मनन। इस चिंतन-मनन के दौरान ऐसा होता है कि मस्तिष्क में नए-नए विचार आते हैं, ज्ञात बातों के नए-नए कारण समझ में आते हैं, घटनाओं और सच्चाइयों के नए-नए पहलुओं का पता चलता है इत्यादि।

जिस इंसान को सच्चा ईमान प्राप्त हो, उसका हाल यह होगा कि हर अध्ययन और निरीक्षण उसके लिए ईश्वरीय खोज का कारण बनता रहेगा। हर अनुभव उसके लिए ईश्वर के निकट होने का साधन बन जाएगा। उसका ईमान शुरू में अगर एक बीज था तो इस तरह बढ़ते-बढ़ते वह एक पूरा पेड़ बन जाएगा। इसी सोच-विचार और आत्मिक प्रक्रिया का इस्लामी नाम

तज़्किया है। ईमान अगर इस्लाम में दाख़िल होने का नाम है, तो तज़्किया ईमान को विकसित करने का नाम।

तज़्किया और ज्ञान

तज़्किया किसी इंसान को निजी ज्ञान के माध्यम से प्राप्त होता है, न कि काल्पनिक गुणवान व्यक्ति की दृष्टि और ध्यान से।

तज़्किये के लिए एक दृष्टिकोण यह है कि किसी गुणवान व्यक्ति की संगत प्राप्त की जाए, क्योंकि गुणवान व्यक्ति की एक दृष्टि इंसान को बदलने के लिए पर्याप्त होती है, लेकिन यह दृष्टिकोण क़ुरआन और हदीस से साबित नहीं। क़ुरआन और हदीस के अनुसार, तज़्किये का उद्देश्य इंसान के ख़ुद अपने चिंतन-मनन से प्राप्त होता है। इंसान के अंदर सही स्वभाव हो और वह पुस्तकों का और प्रकृति का अध्ययन करे तो उससे वह ऐसे अर्थ प्राप्त करेगा, जो उसके व्यक्तित्व का तज़्किया करने वाले हों।

क़ुरआन की सूरह फ़ातिर में पहाड़ों की चर्चा करने के बाद यह श्लोक आया है—

"ईश्वर से डरते तो उसके वही बंदे हैं, जो ज्ञान वाले हैं।" (35:28)

इस श्लोक से पता चलता है कि पहाड़ों का ज्ञान या प्राकृतिक घटनाओं का ज्ञान आदमी के अंदर ईश्वर का डर पैदा करता है यानी डर का स्रोत ज्ञान है। इंसान के अंदर जितना ज़्यादा ज्ञान होगा, उतना ही ज़्यादा वह ईश्वर की सृष्टि-निर्माण योजना (creation plan of God) को समझेगा और इस तरह वह अपने लिए ईश्वर की अनुभूति में वृद्धि करेगा।

तज़्किया किसी इंसान को निजी ज्ञान के माध्यम से प्राप्त होता है, न कि काल्पनिक गुणवान व्यक्ति की दृष्टि और ध्यान से। अध्ययन इंसान के अंदर

सोचने की योग्यता को बढ़ाता है। अध्ययन इंसान को इस योग्य बनाता है कि वह ज़्यादा गहन शैली में चीज़ों से आध्यात्मिक आहार (spiritual food) ले सके, जैसे— हर आदमी हवा में साँस लेता है। हर आदमी के लिए यह संभव है कि वह इस पर ईश्वर का शुक्र करे, लेकिन जो इंसान श्वसन प्रणाली (respiratory system) की आधुनिक खोजों के बारे में जानता हो, उसका शुक्र हज़ारों गुना ज़्यादा बढ़ जाएगा और इस तरह उसके तज़्किये में बहुत ज़्यादा विकास होगा। हक़ीक़त यह है कि ज्ञान इंसान के तज़्किये को ज़्यादा बड़ा कार्यक्षेत्र (frame work) प्रदान करता है। ज्ञान से इंसान को अपने तज़्किये में वृद्धि के नए-नए पहलुओं का पता चलता है। तज़्किये के लिए ज्ञान एक तरह के बूस्टर का दर्जा रखता है।

भटकाव से बचिए

हर चीज़ का एक मूल्य होता है और तज़्किये का भी एक मूल्य है। वह मूल्य है— हर तरह के भटकाव से अपने आपको दूर रखना।

इस संसार में सफलता का एक सिद्धांत यह है— एक काम को करने के लिए दूसरे काम को छोड़ना। यह मानवीय मानसिकता की एक विशेषता है कि इंसान एक ही समय में दो चीज़ों पर समान रूप से ध्यान केंद्रित नहीं कर सकता। वह एक चीज़ पर ध्यान केंद्रित करेगा तो दूसरी चीज़ से उसका ध्यान हट जाएगा। यही सिद्धांत तज़्किये के लिए भी सही है। जो इंसान अपना तज़्किया करना चाहता हो, उसको हर हाल में यह भी करना होगा कि वह तज़्किये से संबंधित हर बेकार (irrelevant) चीज़ को पूर्ण रूप से छोड़ दे।

तज़्किये के रास्ते में सबसे बड़ी रुकावट भटकाव (distraction) है। तज़्किया चाहने वाले के लिए आवश्यक है कि वह तज़्किये को अपना

एकमात्र लक्ष्य (supreme goal) बनाए, वह भटकाने वाली सभी चीज़ों से अपने आपको पूरी तरह से दूर रखे। तज़्किये के लिए मन की एकाग्रता (concentration) हर हाल में आवश्यक है। जिस आदमी के अंदर एकाग्रता की योग्यता न हो, वह निश्चित रूप से तज़्किये की प्राप्ति से वंचित रहेगा।

हर चीज़ का एक मूल्य होता है और तज़्किये का भी एक मूल्य है। वह मूल्य है— हर तरह के भटकाव से अपने आपको दूर रखना, जैसे— ख़ानदानी रस्मो-रिवाज, दोस्ती का कल्चर, खाने और कपड़े का शौक़, दौलत और प्रसिद्धि (fame) की लालसा, शान-शौकत वाला जीवन इत्यादि। इस तरह की सभी चीज़ें तज़्किये के इच्छुक के लिए भटकाव का दर्जा रखती हैं। जो इंसान अपना तज़्किया चाहता हो, उसके लिए अनिवार्य है कि वह इस तरह की सभी चीज़ों से पूरी तरह से दूर रहे।

तज़्किया किसी इंसान को महान इंसान बनाता है। तज़्किया इंसान को इस योग्य बनाता है कि उसे फ़रिश्तों[12] की संगत मिल जाए। तज़्किये के माध्यम से आदमी इस योग्य हो जाता है कि वह ईश्वर के पड़ोस में जीने लगे।

तज़्किये के बिना आदमी सूखी लकड़ी के समान है। तज़्किये के बाद आदमी एक हरा-भरा पेड़ बन जाता है। तज़्किया किसी रहस्यमय चीज़ का नाम नहीं, वह वही चीज़ है जिसे दूसरे शब्दों में विश्वास और आस्था की समझ को जगाना कहा जा सकता है।

[12] ईश्वर की आज्ञानुसार कार्य करने वाला देवदूत।

तज़्किया और वर्तमान समय की माँग

हर युग की एक सोचने की शैली होती है। इंसान किसी बात को केवल उस समय स्वीकार करता है, जबकि वह उसके सोचने की शैली के अनुसार हो।

हर युग की एक सोचने की शैली होती है। आदमी किसी बात को केवल उस समय स्वीकार करता है, जबकि वह उसके सोचने की शैली के अनुसार हो। इसी को 'माइंड का एड्रेस होना' कहते हैं। मानव-मस्तिष्क का यह ख़याल जिस तरह अन्य मामलों में आवश्यक है, उसी तरह वह तज़्किये के मामले में भी आवश्यक है।

प्राचीन युग पारंपरिक रूप से सोचने की शैली का युग था, लेकिन वर्तमान युग वैज्ञानिक सोच का युग है। वर्तमान युग में लोगों का तज़्किया करने के लिए आवश्यक है कि बात को इस तरह कहा जाए, जिससे उनका माइंड एड्रेस हो सके। तज़्किये का स्रोत आज के युग में भी ठीक वही है, जो कि प्राचीन युग में था, लेकिन दोनों में एक अंतर है और वह है उक्ति (expression) और तर्क (reason) के तरीक़ों का अंतर। प्राचीन युग की पारंपरिक शैली उस युग के लोगों के लिए प्रभावशाली हो सकती थी, लेकिन वर्तमान युग में प्रभावशाली तज़्किये के लिए आवश्यक है कि उक्ति के तरीक़े को बदला जाए। केवल इस स्थिति में यह संभव होगा कि आज का इंसान तज़्किये के महत्व को समझे और उसको अपने जीवन में अपनाए।

उदाहरण के लिए— प्राचीन युग में 'आत्म-शुद्धिकरण' शब्द बोला जाता था। यह शब्द प्राचीन पारंपरिक मन को प्रभावित करने के लिए पर्याप्त था, लेकिन आज का इंसान इस सत्य को उस समय ज़्यादा समझ पाता है, जबकि इस बात को बताने के लिए शब्द बदल दिया जाए और यह कहा जाए कि हर इंसान विभिन्न कारणों से कंडीशंड माइंड (conditioned mind)

का केस बन जाता है। उसके सुधार के लिए आवश्यक है कि उसकी डी-कंडीशनिंग की जाए, उसके मन-मस्तिष्क का नवीनीकरण (re-engineering) करके उसको इस योग्य बनाया जाए कि वह चीज़ों को उनके वास्तविक रूप में देखे और ज़्यादा सही रूप से उनके बारे में राय स्थापित करे। तज़्किये के इस तरीक़े से लोगों के मन को प्रभावित करने के लिए आवश्यक है कि मार्गदर्शक का अध्ययन गहरा हो, वह प्राचीन के साथ-साथ आधुनिक बातों की जानकारी रखता हो। इसके बिना आधुनिक इंसान का तज़्किया प्रभावी रूप से नहीं किया जा सकता।

तज़्किये की शर्त

वह जटिलताओं से स्वतंत्र (complex free) इंसान हो, वह चीज़ों को उसी तरह देखने की योग्यता रखता हो, जैसा कि वह वास्तव में हैं।

तज़्किया कोई कलात्मक ज्ञान नहीं। कलात्मक ज्ञान को शब्दों में पूर्ण रूप से व्यक्त किया जा सकता है, लेकिन तज़्किया ईश्वर की अनुभूति और बोध का ज्ञान है और इस ज्ञान को शब्दों में केवल आंशिक रूप से व्यक्त करना संभव है, न कि पूर्ण रूप से। तज़्किये का हर वक्तव्य और हर लेख एक और विस्तार चाहता है और यह विस्तार केवल वह इंसान कर सकता है, जो तज़्किये का इच्छुक हो।

तज़्किये की प्राप्ति के लिए आवश्यक है कि तज़्किये का इच्छुक इस मामले में बहुत ज़्यादा गंभीर हो। वह एक तत्पर मन-मस्तिष्क (prepared mind) की हैसियत रखता हो। उसके अंदर पूरी तत्परता पाई जाती हो। वह हर तरह के पक्षपात (prejudice) से बचा हुआ हो, वह जटिलताओं से स्वतंत्र (complex free) इंसान हो, वह चीज़ों को उसी तरह देखने की योग्यता रखता

हो, जैसा कि वह वास्तव में हैं। वह व्यक्तिगत पक्षपात (bias) को अलग करके चीज़ों को देख सके। वह अपने ख़िलाफ़ बातों को भी उसी तरह सुने, जिस तरह वह अपने अनुकूल बातों को सुनता है। वह किसी शर्त के बिना सत्य को स्वीकार करने के लिए तैयार हो। वह खुले रूप से अपनी ग़लतियों को मानने का स्वभाव रखता हो। वह सही दृष्टिकोण (right angle) के साथ चीज़ों को देख सके इत्यादि।

तज़्किये की प्रक्रिया में दो व्यक्ति शामिल होते हैं— तज़्किये का शिक्षक और तज़्किये का इच्छुक। दोनों में से किसी की भूमिका भी शत-प्रतिशत नहीं, इस मामले में दोनों की भूमिका आधी-आधी है। तज़्किये के प्रशिक्षक की भूमिका यह है कि वह तज़्किये को वास्तविक रूप से जानता हो। उसने क़ुरआन और हदीस के गहन अध्ययन के द्वारा तज़्किये को सही रूप से समझा हो और फिर वह उसको उसकी विशुद्ध शैली में वर्णन कर सके। इस मामले में दूसरी आधी भूमिका तज़्किये के इच्छुक की है। तज़्किये के इच्छुक के अंदर यह योग्यता होनी चाहिए कि वह पूर्ण रूप से स्वीकार करने की क्षमता रखता हो। वह अपने वातावरण से प्रभावित मानसिकता से बाहर आकर तज़्किये की बातों को सुने और समझे। वह पहले से बनी हुई कसौटी से स्वतंत्र हो। वह यह योग्यता रखता हो कि बातचीत के आधार पर अपनी राय बनाए, न कि बोलने वाले के आधार पर। जिस व्यक्ति के अंदर ये गुण हों, वही वह इंसान है, जो तज़्किये के उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल होता है।

सत्य को स्वीकार करना

इंसानियत का उच्चतम स्तर यह है कि इंसान सत्य को मान ले। सत्य की खोज का परिणाम ही सत्य को स्वीकार करना है।

इंसानियत का उच्चतम स्तर यह है कि इंसान सत्य को मान ले। किसी इंसान के लिए वास्तविक चीज़ यही है। सत्य की खोज का परिणाम सत्य को स्वीकार करना है। इंसान अगर सत्य से अपरिचित हो तो वह एक मूर्ख इंसान माना जाएगा। सत्य की खोज के बाद अगर किसी इंसान की स्थिति यह हो कि वह उस सत्य को अपने हृदय के अंदर अनुभव करे, लेकिन ज़ुबान से बोलकर वह उसकी घोषणा न करे तो ऐसा व्यवहार पाखंडी व्यवहार है और अगर ऐसा हो कि सत्य की खोज के बाद वह उसको असल हस्ती के बजाय किसी और से जोड़ दे या ख़ुद उसका श्रेय लेने लगे तो ऐसा इंसान झूठ पर खड़ा हुआ है।

यह काम कोई साधारण काम नहीं। यह दरअसल सही दिशा में इंसान के व्यक्तित्व का विकास है और इसी का दूसरा नाम तज़्किया है। तज़्किया किसी रहस्यमय चीज़ का नाम नहीं है। तज़्किया इस बौद्धिक चेतना का परिणाम है कि इंसान हर चीज़ का श्रेय ईश्वर को दे सके, हर अनुभव उसके लिए ईश्वर से संबंध बढ़ाने का माध्यम बन जाए। इन्हीं अनुभवों के दौरान वह महान व्यक्तित्व बनता है, जिसे विशुद्ध व्यक्तित्व (purified personality) कहा जाता है।

हक़ीक़त यह है कि यह सारा मामला सही और ग़लत रूप से संबंधित करने का मामला है। घटनाओं को ग़लत रूप से किसी से जोड़ना अपनी आत्मा को अपवित्र करना है, यह तज़्किये के अवसर पर अपने आपको तज़्किये से वंचित कर लेना है। इसके विपरीत जब इंसान घटनाओं को

वास्तविक रचयिता से संबंधित करे तो उसने अपनी आत्मा को ऊपर उठाया। तज़्किये के अवसरों को प्रयोग करते हुए उसने अपने आपको वह इंसान बनाया, जिसे तज़्किया-प्राप्त इंसान कहा जाता है। तज़्किया किसी शून्य में नहीं होता, तज़्किया हमेशा वास्तविक जीवन में होता है। तज़्किये के लिए जिस चीज़ की ज़रूरत है, वह जागरूक मस्तिष्क (awakend mind) है, न कि एकांत में किए गए किसी तरह के रहस्यमय कर्म।

तज़्किया और बलिदान

हर चीज़ का एक मूल्य होता है और तज़्किये को पाने का भी एक मूल्य है और वह मूल्य है— तज़्किया-विरुद्ध बातों को छोड़ना।

तज़्किया प्राप्त करना कोई साधारण बात नहीं। तज़्किया प्राप्त करने के लिए हमेशा एक बलिदान की ज़रूरत होती है, शारीरिक बलिदान नहीं, बल्कि मानसिक बलिदान। वह बलिदान है— तज़्किया प्राप्त करने के लिए तज़्किये के ख़िलाफ़ बातों को पूरी तरह से छोड़ देना।

यह प्रकृति का एक सिद्धांत है कि एक चीज़ को पाने के लिए दूसरी चीज़ को छोड़ना पड़ता है। यह नियम तज़्किये के मामले में भी उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना कि दूसरे मामलों में। इन्हीं में से एक चीज़ है ग़लत आदतों को छोड़ना। हर आदमी और औरत अपने वातावरण के प्रभाव से ऐसी चीज़ के आदी हो जाते हैं, जो तज़्किये की राह में रुकावट हैं। तज़्किये के इच्छुक के लिए अनिवार्य है कि वह ऐसी आदतों को पूरी तरह से छोड़ दे।

जैसे— ज़्यादा बोलना और कम सोचना, पारिवारिक माँगों को पूरा करने में व्यस्त रहना, खाने और कपड़े का शौक़ीन होना, मनोरंजन की सभाओं में बैठना, दूसरों की कमियों की चर्चा करना, ख़रीदारी और सैर-

सपाटा के लिए जाना, कम ख़र्च के बजाय फ़िज़ूलख़र्ची, ऊपरी और दिखावे वाली रुचि, आलोचना को बुरा मानना और प्रशंसा पर प्रसन्न होना, भौतिक चीज़ों का लालची होना, ज़रूरतों की चीज़ों पर संतोष न करना, सादगी (simplicity) के बजाय दिखावे को पसंद करना इत्यादि।

हर चीज़ का एक मूल्य होता है और तज़्किये को पाने का भी एक मूल्य है और वह मूल्य है— तज़्किया-विरुद्ध बातों को छोड़ना। जो व्यक्ति तज़्किये की बातें करे, लेकिन वह तज़्किया-विरुद्ध बातों को छोड़ने पर सहमत न हो तो ऐसा व्यक्ति निःसंदेह एक गंभीर व्यक्ति नहीं है और बिना गंभीर स्वभाव के साथ तज़्किये की प्रक्रिया कभी नहीं होती।

हक़ीक़त यह है कि जो इंसान तज़्किये की इच्छा में गंभीर हो, वह ख़ुद ही यह जान लेगा कि क्या चीज़ें तज़्किये के अनुकूल हैं और क्या चीज़ें तज़्किये के ख़िलाफ़। उसकी गंभीरता हर हाल में उसको विवश करेगी कि वह तज़्किये के लिए सहायक बातों को अपनाए और तज़्किया-विरुद्ध बातों को पूरी तरह से छोड़ दे। इस मामले में गंभीरता इस बात की गारंटी है कि इंसान अवश्य ही तज़्किये के स्तर तक पहुँच जाए, वह बिल्कुल भी तज़्किये से वंचित न रहे।

तज़्किया : एक मानसिक कर्म

तज़्किया सबसे पहले मनोवैज्ञानिक सतह पर होता है। उसके बाद ही यह संभव होता है कि इंसान के पूरे अस्तित्व के स्तर पर तज़्किया प्रकट हो।

तज़्किये की प्राप्ति किसी भी तरह के शब्दों के उच्चारण से या किसी तरह के शारीरिक व्यायाम के माध्यम से संभव नहीं। तज़्किया पूरी तरह से एक मानसिक कार्य है और मानसिक सतह पर ही उसे प्राप्त किया जा सकता

है। मानसिक कार्य का अर्थ बौद्धिक कार्य (intellectual activity) है। इंसान का मस्तिष्क हर तरह की सोच का केंद्र है। वास्तव में यह मस्तिष्क ही है, जो किसी इंसान के व्यक्तित्व को आकार देता है। अशुद्ध व्यक्तित्व को भी उसका मस्तिष्क बनाता है और विशुद्ध व्यक्तित्व को जो चीज़ बनाती है, वह भी उसका मस्तिष्क है।

तज़्किये के लिए जिस वास्तविक चीज़ की ज़रूरत है, वह बौद्धिक विकास है यानी चेतना का इस तरह विकास करना कि वह चीज़ों को सॉर्ट आउट कर सके, वह नकारात्मक सोच को सकारात्मक सोच में बदल सके, वह चीज़ों में रचयिता की महानता की झलक देख सके, वह सांसारिक घटनाओं में आध्यात्मिक पहलू की खोज कर सके, वह बाहरी प्रभावों से अपने आपको बचाकर सोच सके, वह शैतान के लालच को पहचानकर उसे रद्द कर सके, वह मन के उकसावे से ऊपर उठकर सोच सके, उसे भविष्य-उन्मुख दृष्टि प्राप्त हो जाए, वह निरर्थक कार्यों से अपने आपको दूर रखे, वह अपने वास्तविक शुभचिंतक को पहचानने वाला हो, वह सुझावों को स्वीकार करे, चाहे वह उसके स्वभाव के ख़िलाफ़ हो, वह अपने ख़िलाफ़ सोचने की क्षमता रखता हो, वह सांसारिक मामलों से गुज़रकर आध्यात्मिकता को अपना लक्ष्य बनाए, उसकी सोच परलोक-मुखी सोच बन जाए इत्यादि।

ये सभी काम मानसिक सतह पर फलीभूत होते हैं, वह आदमी की गहरी सोच से संबंध रखते हैं। जिस आदमी के अंदर गहरी सोच न हो, वह कभी तज़्किये के ऊँचे दर्जे तक नहीं पहुँच सकता। जिस आदमी के अंदर गहरी सोच हो, उसी के अंदर तज़्किये की प्रक्रिया शुरू होगी। तज़्किया वास्तव में मनोवैज्ञानिक (psyclogical) शुद्धिकरण का दूसरा नाम है। तज़्किया सबसे पहले मनोवैज्ञानिक सतह पर होता है। उसके बाद यह संभव होता है कि आदमी के पूरे अस्तित्व के स्तर पर तज़्किया प्रकट हो।

सकारात्मक सोच का महत्व

इंसान पूरी तरह से अपने आपको बे-शिकायत बना ले, शिकायत के कारणों के होने पर भी वह पूरी तरह से एक सकारात्मक सोच वाला इंसान बन जाए।

चार हज़ार वर्ष पहले पैग़ंबर हज़रत इब्राहीम ने अपनी पत्नी हाजरा और अपने बेटे इस्माईल को अरब के रेगिस्तान में बसा दिया और ख़ुद शाम (Syria) वापस चले गए। बाद में इस्माईल बड़े हुए तो उन्होंने क़बीला जुरहुम की एक महिला से विवाह कर लिया।

कुछ समय बाद हज़रत इब्राहीम वहाँ वापस आए। उस समय उनकी मुलाक़ात इस्माईल की पत्नी से हुई। उन्होंने बहुत कठिन परिस्थितियों की शिकायत की। हज़रत इब्राहीम उनसे यह कहकर चले गए कि जब इस्माईल वापस आएँ तो उनको मेरा यह संदेश देना : 'अपने घर की चौखट को बदल दो।' उसके बाद इस्माईल ने अपनी पत्नी को तलाक़ दे दिया और एक दूसरी महिला से विवाह कर लिया।

कुछ समय बाद हज़रत इब्राहीम दोबारा फिर वहाँ आए। दूसरी पत्नी से मुलाक़ात हुई तो उन्होंने कोई शिकायत नहीं की, बल्कि परिस्थिति पर आभार व्यक्त किया। यह सुनकर हज़रत इब्राहीम ने कहा कि इस्माईल आएँ तो उनको मेरा यह संदेश दे देना : 'अपने घर की चौखट को बनाए रखो।'

(सही अल-बुख़ारी, हदीस नं० 3,364)

हज़रत इब्राहीम ने अपनी संतान को रेगिस्तान में बसा दिया था। इसका उद्देश्य यह था कि प्रकृति के साधारण वातावरण में एक नई नस्ल पैदा हो, जो एकेश्वरवाद के मिशन को लेकर उठे और उसको संसार में फैलाए। हज़रत इब्राहीम के बारे में ऊपर लिखी घटनाओं से पता चलता है कि इस महान काम के लिए जिस तरह के लोगों की ज़रूरत है, उनके अंदर सबसे ज़्यादा यह गुण

होना चाहिए कि वे सकारात्मक सोच में जीने वाले हों, वे शिकायत की मानसिकता से पूरी तरह रिक्त हों।

इससे पता चलता है कि तज़्किये की प्रक्रिया में सबसे ज़्यादा महत्ता किस बात की है, वह यह कि आदमी पूरी तरह से अपने आपको बे-शिकायत बना ले, शिकायत के कारणों के होने पर भी वह पूरी तरह से एक सकारात्मक सोच वाला इंसान बन जाए।

नकारात्मक सोच तज़्किये की क़ातिल है, जबकि सकारात्मक सोच तज़्किये के लिए आवश्यक शर्त की हैसियत रखती है। नकारात्मक सोच वाला व्यक्ति शैतान के अधीन हो जाता है, इसके विपरीत सकारात्मक सोच वाला व्यक्ति फ़रिश्तों की संगत में जीने लगता है और यह एक हक़ीक़त है कि तज़्किये की प्राप्ति फ़रिश्तों की सहायता के बिना संभव नहीं।

आत्मनिरीक्षण : तज़्किये का आधार

अगर इंसान ख़ुद न चाहे तो कोई दूसरा व्यक्ति उसके व्यक्तित्व का निर्माण नहीं कर सकता। यही कारण है कि उसके व्यक्तित्व के निर्माण में सारा हस्तक्षेप आत्मनिरीक्षण का है।

हज़रत उमर फ़ारूक़ का एक कथन है— “अपना आत्मनिरीक्षण कर लो, इससे पहले कि तुम्हारा निरीक्षण किया जाए।”

(अत-तिरमिज़ी, हदीस नं० 2,459)

यही आत्मनिरीक्षण तज़्किये का आधार है। तज़्किया किसी प्रशिक्षण कैंप के द्वारा नहीं होता। तज़्किया अध्ययन और अध्यापन (study and teaching) के द्वारा नहीं होता। तज़्किया किसी तरह के रीति-रिवाज के माध्यम से भी नहीं होता। तज़्किये का एकमात्र साधन आत्मनिरीक्षण है यानी

अपना आत्मनिरीक्षण करना, ख़ुद अपना निरीक्षक बनना, अपने बारे में सोच-सोचकर ख़ुद अपने व्यक्तित्व में सुधार करना।

इंसान अकेला ऐसा प्राणी है, जो सोचने की क्षमता रखता है। इंसान को इस तरह परिभाषित किया जाता है कि इंसान कल्पनात्मक सोच-विचार (coneptual thought) करने वाला प्राणी है।

आप एक लकड़ी को गढ़ सकते हैं, आप लोहे को मोड़ सकते हैं, लेकिन इंसान का मामला यह है कि वह अपना मालिक आप है। वह अपनी रचना आप करता है। अगर इंसान ख़ुद न चाहे तो कोई दूसरा व्यक्ति उसके व्यक्तित्व का निर्माण नहीं कर सकता। यही कारण है कि इंसान के तज़्किये या उसके व्यक्तित्व के निर्माण में सारा हस्तक्षेप आत्मनिरीक्षण का है।

मार्गदर्शक या तज़्किया करने वाले का काम केवल यह है कि वह इंसान के अंदर निजी आत्मनिरीक्षण के शक्तिशाली उत्साह को जाग्रत कर दे, वह इंसान के अंदर यह सोचने का ढंग पैदा कर दे कि अगर मैंने अपना तज़्किया न किया तो मैं बरबाद हो जाऊँगा। अगर मैंने ख़ुद में सुधार न किया तो इसका अनिवार्य परिणाम यह होगा कि मैं हमेशा के लिए बरबाद होकर रह जाऊँगा। मुझे अपना तज़्किया ख़ुद करना है और मुझे जो कुछ करना है, वह आज करना है, क्योंकि कल कभी आने वाला नहीं।

इंसान का यह स्वभाव है कि वह अपनी हर ग़लती को उचित सिद्ध करने का कारण (justification) खोज लेता है, उसे हमेशा अपने आपको सही सिद्ध करने के लिए कुछ शब्द मिल जाते हैं। तज़्किये के लिए आवश्यक है कि इंसान के इस स्वभाव को पूर्ण रूप से समाप्त कर दिया जाए, लेकिन इस स्वभाव का समापन ख़ुद इंसान के अपने अधिकार में है, वह किसी भी दूसरे इंसान के अधिकार में नहीं।

आत्मनिरीक्षण कैसे?

इंसान के अंदर स्वयं-विरोधी (anti self) सोच पैदा हो। वह अपने ख़िलाफ़ सोचे और अपने ख़िलाफ़ सुन सके।

तज़्किये का वास्तविक माध्यम आत्मनिरीक्षण है यानी अपने बारे में सोचना, अपनी बातों और कर्मों का विश्लेषण करना, दूसरे शब्दों में, आत्मनिरीक्षण यह है कि आदमी अपना न्यायाधीश (judge) ख़ुद बन जाए। वह अपने ख़िलाफ़ सोचे और अपने बारे में पूरी निष्पक्षता के साथ राय बनाए। इसी का नाम आत्मनिरीक्षण है और इस तरह के आत्मनिरीक्षण के बिना किसी का तज़्किया नहीं हो सकता।

इंसान के अंदर सबसे ज़्यादा शक्तिशाली भावना 'मैं' (ego) की भावना है। यह भावना इतनी ज़्यादा तीव्र है कि हर व्यक्ति जाने या अनजाने में 'मैं', 'मेरे सिवा कोई नहीं' की मानसिकता में जीता है। यही कारण है कि हर आदमी के अंदर बहुत शीघ्र अपने बारे में सोचने की मानसिकता पैदा हो जाती है अर्थात ख़ुद को पसंद करने की मानसिकता।

इस तरह की मानसिकता तज़्किये की क़ातिल है। सही यह है कि आदमी के अंदर स्वयं-विरोधी (anti self) सोच पैदा हो। वह अपने ख़िलाफ़ सोचे और अपने ख़िलाफ़ सुन सके। उमर इब्न अल-ख़त्ताब के अंदर यह भावना इतनी ज़्यादा थी कि उन्होंने कहा— "ईश्वर उस इंसान पर कृपा करे, जो मुझे मेरी कमियों का तोहफ़ा भेजे।"

आत्मनिरीक्षण का यह स्वभाव एक खोज से पैदा होता है और वह है अपनी विवशता (helplessness) की खोज। तज़्किया चाहने वाले को चाहिए कि वह अपनी खोज के स्तर पर इस हक़ीक़त को जाने कि मेरी 'मैं' की अनुभूति (sense of 'I') केवल मेरी अनुभूति की सीमा तक ही सीमित

है। अपनी अनुभूति के बाहर किसी भी चीज़ पर उसका कोई वश नहीं— अपने अस्तित्व को बनाए रखने पर उसका कोई वश नहीं, मौत के मामले में उसका कोई वश नहीं, जीवन को सहारा देने वाली प्रणाली (life support system) पर उसका कोई वश नहीं, परलोक की अदालत में उसका कोई वश नहीं इत्यादि।

जब कोई आदमी अपनी इस पूरी असमर्थता की खोज करता है तो उसके अंदर अनिवार्य रूप से विवशता की भावना पैदा होती है और यही विवशता की अनुभूति आदमी को अपना आत्मनिरीक्षण करने पर विवश कर देती है— इसी खोज में तज़्किये का वास्तविक रहस्य छिपा हुआ है।

परचा आउट

तज़्किया चाहने वाले के साथ अधिकांशतः ऐसा होता है कि उसे ईश्वर की ओर से स्वप्न दिखाया जाता है। स्वप्न में उसे स्पष्ट मार्गदर्शन दिया जाता है।

तज़्किये के सच्चे चाहने वाले के साथ अधिकांशतः ऐसा होता है कि उसे ईश्वर की ओर से स्वप्न दिखाया जाता है। इस स्वप्न में उसे स्पष्ट मार्गदर्शन दिया जाता है कि उसे आगे और क्या करना चाहिए। इस तरह तज़्किया चाहने वाले को विश्वास के साथ अपना चुनाव (choice) करने का अवसर मिल जाता है। तज़्किया चाहने वाले के लिए इस तरह का स्वप्न दिखना उसी तरह की एक विशेष कृपा है, जैसे किसी विद्यार्थी के लिए उसकी परीक्षा का पत्र उसे परीक्षा के पहले ही दिखा दिया जाए।

जो व्यक्ति तज़्किये का चाहने वाला हो, उसके सामने कई बार अनेक तरह के प्रश्न आते हैं। उसे दो में एक का निर्णय लेना होता है। तज़्किये का चाहने वाला अगर इस तरह के अवसर पर ईश्वर से प्रार्थना करे तो बहुत संभव

है कि ईश्वर उसकी प्रार्थना को स्वीकार करते हुए उसे एक ऐसा स्वप्न दिखा दे, जिसमें उसके लिए मार्गदर्शन हो, जो उसे संदेह और दुविधा से निकालकर विश्वास की ओर ले जाने वाला हो।

इस तरह का स्वप्न निःसंदेह ईश्वर की एक विशेष कृपा है, लेकिन अगर कोई व्यक्ति स्वप्न देखने के बाद भी उससे मार्गदर्शन न ले तो उसका मामला उस छात्र के जैसा हो जाएगा, जिसका परीक्षा-पत्र उसे पहले ही दिखा दिया जाए, इसके बाद भी वह परीक्षा में असफल रहे।

तज़्किया पचास प्रतिशत बंदे का मामला है और पचास प्रतिशत ईश्वर का मामला। तज़्किया चाहने वाले को चाहिए कि वह बराबर ईश्वर से प्रार्थना करे। यह प्रार्थना उसके लिए ईश्वर से जुड़ने का माध्यम बनेगी। वह अपने मामलों में ईश्वर से इस्तिख़ारा[13] करे। इस्तिख़ारा एक तरह से अपने मामलों में ईश्वर के साथ परामर्श (counselling) करना है और ईश्वर से परामर्श करने वाला कभी बेराह नहीं होता।

ईश्वर अगर उसको उसके मामले में कोई स्वप्न दिखा दे तो उसको समझना चाहिए कि ईश्वर ने उसके परीक्षा-पत्र को उसे पहले ही दिखा दिया है, अब उसके लिए कोई दूसरा चुनाव शेष नहीं रहा है। जिस व्यक्ति को ईश्वर इस हद तक मार्गदर्शन दे और फिर भी वह उस मार्गदर्शन को स्वीकार न करे तो यह उसके लिए इतना बड़ा अपराध होगा, जो किसी भी स्थिति में क्षमा के योग्य नहीं। ईश्वर ऐसे इंसान से कोई बहाना (excuse) स्वीकार नहीं करेगा, वह उसको हमेशा के लिए अपनी निकटता से वंचित कर देगा।

---

[13] सच्चे मन से प्रार्थना के पश्चात जब ईश्वर इंसान का मार्गदर्शन करता है और उसकी दुविधा को दूर कर देता है, जो मार्ग उसके लिए सही है, उस पर दृढ़ संकल्प और मन को शांति प्रदान करता है।

तज़्किया और संसार का त्याग

तज़्किये के लिए मानसिक अर्थों में संसार से अभिरुचि न रखना वांछित है, न कि व्यावहारिक अर्थों में संसार का त्याग।

बाद के युग में कुछ लोगों ने तज़्किये के लिए संसार त्यागने का रास्ता चुना, लेकिन तज़्किये के लिए मानसिक अर्थों में संसार से अभिरुचि न रखना वांछित है, न कि व्यावहारिक अर्थों में संसार का त्याग। संसार के त्याग का दृष्टिकोण वास्तव में ईश्वर के संदेश को लोगों तक न पहुँचाने वाली सोच की पैदावार है। संसार में अनिवार्य रूप से इंसान भी शामिल है, इसलिए संसार को छोड़ने का अर्थ इंसान को छोड़ना भी बन जाता है।

दाओ यह सहन नहीं कर सकता कि वह किसी भी बहाने से इंसान को छोड़ दे। दूसरे लोग इंसान को किसी और दृष्टि से देख सकते हैं, लेकिन दाओ इंसान को मदऊ[14] की दृष्टि से देखता है। दाओ की दृष्टि में हर इंसान मदऊ है, चाहे वह धनी हो या निर्धन, चाहे वह साधारण इंसान हो या विशिष्ट, चाहे वह शासक हो या प्रजा, यहाँ तक कि वह विरोधी और अत्याचारी क्यों न हो। दाओ की दृष्टि में हर एक केवल इंसान है। दाओ की सबसे पहली इच्छा यह होती है कि वह हर इंसान तक सत्य का संदेश पहुँचाए।

दाओ यह सहन नहीं कर सकता कि वह यह कहे कि कोई व्यक्ति एक दरवाज़े से आएगा तो मैं दूसरे दरवाज़े से निकल जाऊँगा। वह यह कहेगा कि आने वाला हर व्यक्ति मेरे लिए मदऊ है, इसलिए मैं आगे बढ़कर उससे मिलूँगा और समझदारी के साथ सत्य का संदेश उस तक पहुँचाऊँगा।

संसार का त्याग व्यावहारिक अर्थों में मदऊ को छोड़ना है। संसार का त्याग वास्तव में उन लोगों से दूर जाना है, जो एक दाओ के लिए वांछित की

---

[14] वह व्यक्ति जिसको ईश्वर का संदेश पहुँचाना है।

हैसियत रखते हैं। एक व्यापारी हर चीज़ को छोड़ सकता है, लेकिन वह अपने ग्राहक को नहीं छोड़ सकता। इस तरह एक दाओ हर दूसरी चीज़ को सहन कर सकता है, लेकिन वह इसको सहन नहीं कर सकता कि वह मदऊ को छोड़कर किसी अलग स्थान पर चला जाए। मदऊ के बीच रहते हुए अगर उसे किसी कठिनाई का सामना करना पड़ता है, अगर उसके दामन पर कीचड़ के धब्बे लग जाते हैं, तब भी वह कीचड़ की अनदेखी करेगा, लेकिन वह मदऊ से संबंधों का टूटना सहन नहीं कर सकता।

एक मोमिन का उद्देश्य जिस तरह तज़्किया है, उसी तरह उसका उद्देश्य दावत[15] भी है और एक सच्चे मोमिन के लिए संभव नहीं कि वह तज़्किये को छोड़ दे या दावत को बंद कर दे।

तज़्किये का प्रेरक

शक्तिशाली प्रेरक वही हो सकता है, जिसमें सारा ध्यान अपने व्यक्तित्व पर हो, न कि किसी बाहरी व्यवस्था पर।

अगर यह कहा जाए कि इस्लाम का लक्ष्य (goal) सदाचारी व्यवस्था स्थापित करना है तो इस सदाचारी व्यवस्था के लिए सुधारकों की ज़रूरत है। तज़्किये का उद्देश्य यह है कि ऐसे सदाचारी लोग तैयार किए जाएँ, जो सदाचारी व्यवस्था स्थापित कर सकें। यह बात कहने में प्रत्यक्ष रूप से हानि न पहुँचाने वाली बात प्रतीत होती है, लेकिन वह तज़्किये की प्रक्रिया के लिए निःसंदेह क़ातिल की हैसियत रखती है। इस तरह की सोच वाले इस्लाम के अंतर्गत कभी तज़्किये की प्रक्रिया प्रभावशाली रूप से जारी नहीं हो सकती।

15 ईश्वर के मार्ग पर बुलाना।

इस परीक्षा के संसार में इंसान को ऐसी परिस्थितियों में रहना पड़ता है, जहाँ हर ओर तज़्किये के ख़िलाफ़ कारण मौजूद हैं। ऐसी स्थिति में तज़्किये की प्रक्रिया जारी करने के लिए बहुत ही शक्तिशाली प्रेरक (inspiration) की ज़रूरत है और शक्तिशाली प्रेरक वही हो सकता है, जिसमें सारा ध्यान अपने व्यक्तित्व पर हो, न कि किसी बाहरी व्यवस्था पर।

सच्चे तज़्किये के लिए आवश्यक है कि आदमी यह अनुभव करे कि तज़्किये के बिना वह बिल्कुल भी सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। तज़्किया न करने की स्थिति में उसके लिए अनंत काल तक वंचित रहने के सिवा और कुछ नहीं। इस तरह के शक्तिशाली प्रेरक के बिना कभी कोई व्यक्ति तज़्किये पर जम नहीं सकता। सच्चे तज़्किये के लिए बहुत ही ज़्यादा कठोर आत्मनिरीक्षण की ज़रूरत होती है और कठोर आत्मनिरीक्षण कभी किसी बाहरी व्यवस्था के संपर्क से पैदा नहीं हो सकता।

अगर मैंने अपना तज़्किया न किया तो मैं बरबाद हो जाऊँगा— इस तरह का गंभीर प्रेरक किसी व्यक्ति के अंदर केवल उसी समय पैदा हो सकता है, जबकि तज़्किया उसके लिए एक बहुत ही निजी मामला हो, न कि कोई बाहरी मजबूरी या दूर की कोई ज़रूरत। व्यवस्था एक बाहरी चीज़ है, जिसका संबंध पूरे समाज से होता है। इस तरह का हवाला किसी व्यक्ति के अंदर शक्तिशाली प्रेरक बनकर प्रविष्ट नहीं हो सकता। हक़ीक़त यह है कि तज़्किया हमेशा अपने व्यक्तित्व के हवाले से किसी के जीवन में शामिल होता है, न कि किसी बाहरी व्यवस्था के हवाले से।

तज़्किया : तैयारी की प्रक्रिया

संसार में स्वार्थी होना काम आता है, परलोक में वह व्यक्ति सफल होगा, जो अपने आपको एक अनुशासित व्यक्ति साबित करे।

वर्तमान भौतिक संसार में हर आदमी को रोज़गार की ज़रूरत होती है, जिसे नौकरी कहा जाता है। हर आदमी चाहता है कि उसे एक अच्छी नौकरी मिले। इसके लिए हर आदमी अपने आपको जॉब मार्किट की माँग के अनुसार एक तैयार प्रोफेशनल इंसान बनाता है। जो आदमी इस दृष्टि से अपने आपको तैयार न कर सके, वह सारी उम्र के लिए एक असफल इंसान बनकर रह जाता है।

यही मामला ज़बरदस्त अंदाज़ में परलोकवादी संसार का है। परलोकवादी संसार बहुत ही उच्च स्तर की ईश्वरीय गतिविधियों का संसार है। परलोकवादी संसार में वही व्यक्ति सफल होगा, जो वर्तमान संसार में उसके अनुसार तैयारी करे, जो वर्तमान संसार में अपने आपको आध्यात्मिक आधार पर एक तैयार इंसान (spiritually prepared person) बनाए। जो आदमी वर्तमान संसार में अपने आपको इस पहलू से तैयार न कर सके, वह परलोक में एक असफल इंसान बनकर रह जाएगा।

यह सारा मामला योग्यता (competence) का मामला है। एक तरह की योग्यता संसार में काम आती है और दूसरी तरह की योग्यता परलोक में काम आएगी। संसार में देखने में तो अनेकेश्वरवाद काम आता है, परलोक में एकेश्वरवाद काम आएगा। संसार में ख़ुद को महत्व देना काम आता है, परलोक में ईश्वर को महत्व देने का मामला काम आएगा। संसार में चीज़ों को सांसारिक दृष्टि (material algle) से देखना काम आता है, परलोक में चीज़ों को आध्यात्मिक दृष्टि से देखना काम आएगा। संसार में स्वार्थी होना काम आता है, परलोक में वह व्यक्ति सफल होगा, जो अपने आपको एक सैद्धांतिक

(principled) व्यक्ति साबित करे। संसार में देखने में तो बेईमानी काम आती है, परलोक में ईमानदारी काम आएगी। संसार में तुरंत लाभ वाला स्वभाव काम आता है, परलोक में वह व्यक्ति सफल होगा जिसने परलोक की मोहब्बत की नींव पर अपने जीवन का निर्माण किया हो।

तज़्किये का अर्थ अपने आपको परलोकवादी दृष्टि से तैयार करना है यानी अपने अंदर वह गुण पैदा करना, जो मौत के बाद आने वाले संसार में व्यक्ति के काम आएँ।

तज़्किये के आइटम की खोज करना

बौद्धिक प्रक्रिया के बिना तज़्किये को पाने की आशा रखना केवल एक ग़लतफ़हमी रखना है, जो कभी हक़ीक़त बनने वाली नहीं।

तज़्किये का साधन अपनी सोच को सक्रिय करना है। इसका एक तरीक़ा यह है कि आप ढूँढ़-ढूँढ़कर अपने जीवन की उन घटनाओं को याद करें, जब आप किसी बड़ी कठिनाई में फँसने वाले थे, लेकिन ईश्वर ने अपनी विशेष सहायता से आपको उससे बचा लिया। ऐसी दुर्घटनाएँ और घटनाएँ हर व्यक्ति के जीवन में होती रहती हैं, लेकिन बाद में व्यक्ति उन दुर्घटनाओं और घटनाओं को भूल जाता है।

तज़्किये के इच्छुक को चाहिए कि वह बार-बार सोचकर ऐसी घटनाओं को अपने मन में ताज़ा करे, जबकि वह तबाही के ठीक किनारे पर पहुँच चुका था, लेकिन ईश्वर ने अपने विशेष हस्तक्षेप से उसको बचा लिया। इन घटनाओं को वह गंभीरतापूर्वक याद करे और फिर कहे कि ऐ मेरे रब, तूने मुझे सांसारिक जीवन में बार-बार भयानक परिणाम से बचा लिया, उसी तरह तू मुझे मौत के बाद आने वाले संसार में नरक की भयानक पीड़ा और दंड से बचा ले।

इसी तरह इस मामले की एक स्थिति यह है कि आप अपनी लापरवाही को याद करके अपने अंदर अपनी ग़लती के अहसास को जगाएँ। किसी मामले में अगर आप अनुभव करें कि आप 99% सही थे, केवल आप एक प्रतिशत ग़लत थे, तो ऐसे अवसर पर आप यह करें कि 99% को भुला दें और एक प्रतिशत को इतना ज़्यादा बढ़ाएँ कि आपको अनुभव हो कि मानो सारी ग़लती आप ही की थी। इस तरह आपके अंदर ग़लती का अहसास जागेगा। आप ईश्वर के डर से काँप उठेंगे, आप बहुत ज़्यादा पश्चाताप की भावना के साथ ईश्वर से क्षमा की प्रार्थना करने लगेंगे।

तज़्किया कोई रहस्यमय चीज़ नहीं, तज़्किया की एक ज्ञात प्रक्रिया है और वह है बार-बार तज़्किये से संबंध रखने वाले पहलुओं पर सोचना। तज़्किया हमेशा चेतना को जगाने का परिणाम होता है, न कि किसी रहस्यमय चमत्कार का परिणाम। कोई व्यक्ति जितना ज़्यादा इस मामले में सोचेगा, उतना ही ज़्यादा उसका तज़्किया होगा। तज़्किया पूरे अर्थों में बौद्धिक प्रक्रिया है। इस बौद्धिक प्रक्रिया के बिना तज़्किये को पाने की आशा रखना केवल एक ख़याली पुलाव (wishful thinking) है, जो कभी हक़ीक़त बनने वाली नहीं।

तज़्किया : ईश्वर से निकटता का साधन

इंसान अपने आपको जब ग़ैर-ईश्वरीय भावनाओं से मुक्त करता है, वह अनुभव करता है कि वह अपने रचयिता के अंतिम सीमा तक निकट हो गया है।

इंसान रचना है और ईश्वर उसका रचयिता है। इस दृष्टि से इंसान की प्रकृति यह है कि वह अपने रचयिता से अंतिम सीमा तक निकट हो, लेकिन विभिन्न चीज़ें इंसान को ईश्वर से दूर कर देती हैं, जैसे— अहंकार, नकारात्मक सोच इत्यादि।

तज़्किये का उद्देश्य यह है कि इंसान को इस तरह की नकारात्मक भावनाओं से पूरी तरह पवित्र किया जाए। इंसान जैसे ही अपने आपको इस तरह की ग़ैर-ईश्वरीय भावनाओं से पवित्र करता है, अचानक वह अनुभव करता है कि वह अपने रचयिता के अंतिम सीमा तक निकट हो गया है। वह अपने आस-पास ईश्वर की उपस्थिति (presence of God) का अनुभव करने लगता है।

ईश्वर से गहरी निकटता केवल उस समय हो सकती है, जबकि इंसान ईश्वर को उसके सर्वोच्च गुणों के साथ खोज करे, जैसे— हर इंसान संसार में रहने के लिए अनगिनत चीज़ों पर निर्भर है। ये चीज़ें उसने ख़ुद नहीं पैदा की हैं, इसका एक देने वाला है और वह देने वाला निःसंदेह ईश्वर है। ईश्वर ही वह हस्ती है, जो उस पर एकमात्र कृपा करने वाला और दाता (Giver) है। यह निःसंदेह ईश्वर की एकतरफ़ा कृपाएँ हैं, जिनके आधार पर वह इस संसार में जीवित है और मौजूद है। एक पल के लिए अगर इन एकतरफ़ा उपहारों का सिलसिला टूट जाए तो इंसान अपने अस्तित्व को बाकी नहीं रख सकता।

जब एक व्यक्ति इस तरह ईश्वर को 'देने वाले' की हैसियत से खोज करता है तो उसके स्वाभाविक परिणामस्वरूप ऐसा होता है कि उसकी आत्मा के अंदर ईश्वर के प्रति प्रेम का फव्वारा फूट पड़ता है। वह उस हक़ीक़त की तस्वीर बन जाता है, जिसका वर्णन क़ुरआन में इस तरह किया गया है—

"जो ईमान वाले हैं, उन्हें सबसे बढ़कर ईश्वर से प्रेम होता है।" (2:165)

क़ुरआन में ईश्वर की निकटता प्राप्त करने के लिए सज्दे[16] का वर्णन है— "सज्दा कर और निकट हो जा।" (96: 19)

ईश्वर के निकट होने का यह सज्दा क्या है? यह सज्दा वास्तव में उस इंसान का सज्दा है, जो अपने रचयिता के लिए प्रेम और श्रद्धायुक्त भय की

---

[16] सम्मान और समर्पण के भाव से माथा टेकना।

भावना से भरा हुआ हो और इस श्रद्धा के अंतर्गत वह अपने रचयिता के सामने सज्दे में गिर पड़े— इस तरह का सज्दा एक मोमिन के लिए मानो तज़्किये की उच्चतम श्रेणी (highest category) है।

तज़्किया और मौत की याद

मौत इंसान को याद कराती है कि तज़्किये के काम में देरी को तुम सहन नहीं कर सकते, तज़्किये का काम आज ही कर डालो।

तज़्किये के काम के लिए मौत की याद (remembrance) बहुत शक्तिशाली साधन है। मौत की याद तज़्किये को तुरंत शुरू करने के एक काम की हैसियत दे देती है। मौत की याद इंसान के अंदर इस पहलू से एक तात्कालिकता की भावना (sense of urgency) पैदा करती है। मौत इंसान को याद कराती है कि तज़्किये के काम में देरी को तुम सहन नहीं कर सकते, तज़्किये का काम आज ही कर डालो, क्योंकि कल के बारे में ज्ञात नहीं कि वह तुम्हारे लिए मौत का दिन होगा या जीवन का दिन।

मौत का विचार इंसान को याद कराता है कि तुम पर किसी भी पल वह समय आने वाला है, जबकि तुम मर जाओगे। उसके बाद तुम्हारा उस गंभीर परिस्थिति से सामना होने वाला है, जिसका वर्णन क़ुरआन में इन शब्दों में किया गया है— "सारे संसार के रचयिता के सामने इंसान का खड़ा किया जाना।" (83:6)

यह वह दिन होगा जबकि फ़रिश्ते इंसान को ले जाकर ईश्वर के सामने प्रस्तुत कर देंगे। ईश्वर जो हर खुले और छुपे को जानता है, वह इंसान से उसके कर्मों और बातों का हिसाब लेगा। एक हदीस के अनुसार, इंसान के क़दम उस समय तक ईश्वर के सामने से नहीं हटेंगे, जब तक वह ईश्वर के प्रश्नों का उत्तर न दे दे।

मौत को याद करने का अर्थ यह है कि आदमी अपने जीवन के उस सबसे गंभीर पल को याद करे। वह उस आने वाले समय के बारे में सोचता रहे, जो हर हाल में उस पर आएगा। उस दिन उसके अनंत भविष्य (eternal future) का निर्णय किया जाएगा।

यह सोच निःसंदेह एक ऐसी सोच है, जो आदमी के अंदर भूचाल पैदा कर दे। यह एक हक़ीक़त है कि जो व्यक्ति इस तरह मौत के बारे में सोचे, वह अपने तज़्किये के बारे में बहुत चिंतित हो जाएगा। वह अंतिम सीमा तक यह प्रयास करेगा कि वह हर पहलू से अपना तज़्किया कर डाले, इससे पहले कि उसकी मौत हो और उसके लिए अपने सुधार का समय न बचे।

तज़्किये का उद्देश्य

तज़्किये का उद्देश्य यह है कि ऐसी पवित्र आत्माएँ अस्तित्व में आएँ, जो परलोक में ईश्वर की स्तुति पर आधारित जीवन की व्यवस्था का हिस्सा बन सकें।

क़ुरआन की सूरह अज़-ज़ुमर में स्वर्ग में जाने वाले लोगों के मामले को इस तरह बताया गया है— "और जो लोग अपने रचयिता से डरे, वे गिरोह-दर-गिरोह स्वर्ग की ओर ले जाए जाएँगे, यहाँ तक कि जब वे वहाँ पहुँचेंगे तो स्वर्ग के दरवाज़े खोल दिए जाएँगे और स्वर्ग के प्रहरी (Sentinel) उनसे कहेंगे— सलाम हो तुम पर! ख़ुशहाल रहो! तुम हमेशा के लिए स्वर्ग में दाख़िल हो जाओ। और वे कहेंगे कि शुक्र है उस ईश्वर का, जिसने हमारे साथ अपना वादा सच कर दिखाया और उसने हमें इस ज़मीन का वारिस बना दिया। हम स्वर्ग में जहाँ चाहे, वहाँ बसें। अतः क्या ख़ूब बदला है कर्म करने वालों का! और तुम फ़रिश्तों को देखोगे कि वे अर्श[17] के चारों ओर घेरा बाँधे हुए

[17] वह स्थान, जहाँ ईश्वर विराजमान है।

अपने रब का गुणगान कर रहे होंगे। और लोगों के बीच ठीक-ठीक फ़ैसला कर दिया जाएगा और कहा जाएगा कि सारी तारीफ़ ईश्वर के लिए है, सारे संसार का रचयिता।" (39:73-75)

"सारी तारीफ़ें ईश्वर ही के लिए हैं, जो सारे संसार का पालने वाला है" सूरह अल-फ़ातिहा की यह आयत संसार के संबंध में आई है। सूरह अज़-ज़ुमर के ऊपर कथित उल्लेखन में यह आयत दोबारा परलोकवादी संसार के लिए आई है। इससे ज्ञात होता है कि इंसान से जिस असल चीज़ की अपेक्षा की गई है, वह ईश्वर का गुणगान करना है। इसी चीज़ की वर्तमान संसार में भी अपेक्षा की गई है और परलोक में भी यही चीज़ अपेक्षित होगी—

तज़्किये का वास्तविक उद्देश्य यह है कि ऐसी पवित्र आत्माएँ (purified souls) अस्तित्व में आएँ, जो परलोक में ईश्वर की स्तुति (glorification) पर आधारित जीवन की व्यवस्था का हिस्सा बन सकें।

वर्तमान संसार में इंसान का एक काम यह था कि वह एक सभ्यता को को अस्तित्व में लाए। इंसान ने बड़े पैमाने पर इस काम को फलीभूत किया, पाषाण युग (stone age) से शुरू करके उसने इसे इलेक्ट्रॉनिक युग तक पहुँचा दिया। यह काम प्रकृति के नियमों की खोज के द्वारा पूरा हुआ, लेकिन व्यावहारिक रूप से यह हुआ कि इंसान ने एक सही काम में ग़लत काम को मिला दिया। प्राकृतिक शक्तियों पर नियंत्रण प्राप्त करने के बाद वह विद्रोही बन गया। उसने तानाशाही शासन प्रणाली (dispotic system) को स्थापित किया। उसने स्वतंत्रता के नाम पर अराजकता (anarchy) को बढ़ावा दिया। उसने फ़ैशन के नाम पर नंगेपन (nudity) को बढ़ावा दिया इत्यादि।

इसलिए क़यामत में यह होगा कि नेक और सच्चे लोगों को चुनकर उनको यह अवसर दिया जाएगा कि वे ईश्वरीय सभ्यता को अधिकाधिक श्रेष्ठ रूप से स्थापित करें। यही वह हक़ीक़त है, जिसका क़ुरआन की एक आयत में इस तरह वर्णन किया गया है— "और हम ज़बूर (Psalms) में उपदेश के बाद लिख चुके हैं कि ज़मीन के उत्तराधिकारी मेरे सदाचारी बंदें होंगे।" (21:105)

हक़ीक़त यह है कि मानव जीवन ईश्वर की अनुभूति की एक यात्रा है। यह यात्रा इस संसार से लेकर परलोक तक चली जा रही है। संसार में ईश्वर की अनुभूति की यात्रा बहुत ही सीमित स्तर पर फलीभूत होती है, परलोक में यह यात्रा असीमित रूप से जारी रहेगी। इस यात्रा को सफलता के साथ वही इंसान तय कर सकता है, जो अपना तज़्किया करके अपने आपको इसके योग्य बनाए।

क़ुरआन में बताया गया है कि ईश्वर की बातें इतनी ज़्यादा हैं कि अगर संसार के सारे समुद्रों को तथा उनके बराबर और समुद्रों को स्याही (ink) बना दिया जाए और संसार के सभी पेड़ों को क़लम (pen) बना दिया जाए और फिर ईश्वर की बातों को लिखना शुरू किया जाए तो सारे समुद्रों की स्याही समाप्त हो जाएगी, लेकिन ईश्वर की निशानियाँ (signs and blessings) समाप्त न होंगी। (31:27)

यह बात जो क़ुरआन में कही गई है, यह सूचना नहीं है, बल्कि आदेश है यानी इसका अर्थ यह है कि इस्लाम के अनुयायियों को चाहिए कि वे ईश्वर की उन निशानियों की खोज करें और इस तरह वे अपनी मअरिफ़त[18] को लगातार बढ़ाते रहें।

क़ुरआन की पहली आयत यह है— "सारी तारीफ़ें ईश्वर ही के लिए हैं, जो सारे संसार का रचयिता है।" (1:1)

यह आयत भी सूचना नहीं है, बल्कि यह आदेश है। यह आयत मअरिफ़त की खोज के संसार के शुरू होने को बताती है। दूसरी जगह क़ुरआन में परलोक से संबंधित इसी आयत का वर्णन इस तरह है— "...और कहा जाएगा, सारी तारीफ़ें ईश्वर ही के लिए है, जो सारे संसार का रचयिता है।" (39:75)

यह दूसरी आयत मअरिफ़त की खोज के अगले चरण को बताती है, जो परलोक के ज़्यादा श्रेष्ठ वातावरण में अनंत काल तक जारी रहेगी।

---

[18] ईश्वर की अनुभूति।

एक हदीस में बताया गया है कि ईश्वर इस्लाम की धर्मनिरपेक्ष (secular) लोगों द्वारा सहायता करेगा। (सही अल-बुख़ारी)

इस हदीस में जिस धार्मिक सहायता की चर्चा है, उसका सबसे बड़ा सबूत लगभग 19वीं और 20वीं सदी के वैज्ञानिकों का काम है। उन्होंने मअरिफ़त की प्राप्ति के लिए एक वैज्ञानिक रूपरेखा (scientific framework) दी। परलोक में इस मअरिफ़त की यात्रा को जारी रखने के लिए इस्लाम के अनुयायियों को ज़्यादा ऊँचे दर्जे के सहायक प्राप्त होंगे, ये फ़रिश्ते होंगे, जैसे

कि क़ुरआन में वर्णन है— "... हम सांसारिक जीवन में भी तुम्हारे मित्र (संरक्षक) हैं और परलोक में भी...।" (41:31)

तज़्किये का मापदंड

अनेकेश्वरवाद से पूरी तरह से पवित्र होना और ईश्वर को पूर्ण रूप से अपने ध्यान का केंद्र बना लेना।

तज़्किये का मापदंड (criterion) क्या है? तज़्किये का मापदंड यह है कि इंसान को इस्लामी विचारधारा और जीवन-शैली से इतनी ज़्यादा समानता पैदा हो जाए कि वह उसको अपने हृदय की आवाज़ अनुभव करने लगे। वह बिना किसी झिझक के तुरंत उसे स्वीकार कर ले, चाहे वह उसके अनुकूल हो या उसके ख़िलाफ़।

तज़्किये का वास्तविक उद्देश्य ईश्वर से लगाव बताया गया है। यह बिल्कुल सही है। इसे दूसरे शब्दों में इस तरह कहा जा सकता है कि तज़्किये की पहचान यह है कि बंदे की एकमात्र फ़िक्र (sole concern) केवल एक हस्ती बन जाए और वह ईश्वर की हस्ती है। इसी का धार्मिक शब्दावली में नाम 'तौहीद' है यानी अनेकेश्वरवाद से पूरी तरह से पवित्र होना और ईश्वर को पूर्ण रूप से अपने ध्यान का केंद्र बना लेना।

ईश्वर को अपनी एकमात्र सोच का केंद्र बनाना कोई साधारण बात नहीं। यह इंसान के व्यक्तित्व में संपूर्ण क्रांति के समान है। ऐसे इंसान की स्थिति यह होती है कि वह पूर्ण अर्थों में ईश्वर को 'देने वाला' (Giver) समझने लगता है और अपने आपको पूर्ण रूप से 'पाने वाला' (taker)। उसकी सोच ईश्वर-केंद्रित सोच (God oriented thinking) बन जाती है। उसकी भावनाओं का केंद्र ईश्वर बन जाता है। उसकी बात और उसके चरित्र में ईश्वरीय रंग दिखाई देने लगता है। उसके अंदर पूरी तरह से विनम्रता (modesty) पैदा हो जाती है। वह 'कट टू साइज़' (cut to size) व्यक्ति बन जाता है, दूसरों के लिए उसके हृदय में घृणा के बजाय भलाई पैदा हो जाती है, उससे लोगों को अकड़ के बजाय विनम्रता का अनुभव होने लगता है, वह हर मामले में अपनी ग़लती ढूँढ़ने लगता है, बजाय इसके कि वह दूसरों को ग़लत सिद्ध करने का प्रयास करे, वह बोलने से ज़्यादा शांत रहना पसंद करने लगता है, आगे की सीट प्राप्त करने के बजाय वह पीछे की सीट लेना पसंद करता है, वह बोलने से पहले यह सोचता है कि मेरी बात ईश्वर के यहाँ स्वीकार करने के योग्य होगी या ईश्वर के यहाँ रद्द कर दी जाएगी। वह एकांत में भी उसी तरह सतर्क हो जाता है, जिस तरह कोई व्यक्ति किसी जनसमूह के बीच सतर्क होता है।

तज़्किया

आत्मा का शुद्धिकरण

तज़्किया किसी रहस्यमय चीज़ का नाम नहीं है। तज़्किये का माध्यम ध्यान (meditation) नहीं है, बल्कि तज़्किये का माध्यम चिंतन-मनन (contemplation) है। खुद के बारे में और संपूर्ण सृष्टि के बारे में चिंतन-मनन करना और उनसे ईश्वर की अनुभूति (God realization) की मानसिक या बौद्धिक जीविका प्राप्त करना। यही वह प्रक्रिया है, जिससे आदमी के अंदर विशुद्ध व्यक्तित्व (purified personality) बनता है।

मौलाना वहीदुद्दीन ख़ान 'सेंटर फॉर पीस एंड स्प्रिचुएलिटी', नई दिल्ली के संस्थापक हैं। मौलाना का मानना है कि शांति और आध्यात्मिकता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं : आध्यात्मिकता शांति की आंतरिक संतुष्टि है और शांति आध्यात्मिकता की बाहरी अभिव्यक्ति। विश्व-शांति में अपने महत्वपूर्ण योगदान के लिए उन्हें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान प्राप्त है।

ISBN 978-93-86589-35-4

₹45.00

CPS International
centre for peace & spirituality
www.cpsglobal.org

Goodword
www.goodwordbooks.com